GUNAHON KI NUHOOSAT (HINDI)

गुनाहों की पहचान और इन की नुहूसतों से नजात दिलाने वाला

एक मुनफ़रिद तहरीरी बयान

गुनाहों की नुहूसत

- गुनाह किसे कहते हैं? 18
- गुनाह भुलाया नहीं जाता 23
- गुनाहों के दस नुक़्सान 38
- गुनाहों के ग्यारह इलाज 56
- हसद क्या है? 60
- चुग़ली से घर की बरबादी 71
- शराब के दस नुक़्सान 90

पेशकश :-

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम **1428** हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात कम हों** या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब "**गुनाहों की नुहूसत**" उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (**हिन्दी–गुजराती**) ने इस किताब को हिन्द (**INDIA**) की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआमलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

1 कमो बेश दस(10) मराहिल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-
(**1**) कम्पोज़िंग (**2**) सेटिंग (**3**) कम्पयूटर तक़ाबुल (**4**) तक़ाबुल बिल किताब (**5**) सिंगल रीडिंग (**6**) कम्पयूटर करेक्शन (**7**) करेक्शन चेकिंग (**8**) फ़ाइनल रीडिंग (**9**) फ़ाइनल करेक्शन (**10**) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

2 क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुतालआ फ़रमाइयें।

3 हिन्दी पढ़ने वालों को सहीह उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में हासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी–जोडणी** (**SPELLING**) रखी गई है और बतौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़्तूह (ज़बर वाले) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के पहले डेश (–) और साकिन (जज़्म वाले) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन عُلَمَاء (**उ–लमा**) में "**–ल**" मफ़्तूह और رَحْم (**रह्म**) में "**ह्**" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी–फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" और "رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी–बेशी** या **ग़–लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح	
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ	
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ू = ٗ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ॄ = ؤ	ा = آ

–: राबित़ा :–

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

गुनाहों की पहचान और इन की नुहूसतों से नजात
दिलाने वाला एक मुनफ़रिद तहरीरी बयान

गुनाहों की नुहूसत

-: पेशकश :-

मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली–110006

फ़ोन : 011-23284560

e-mail : maktabadelhi@gmail.com

नाम किताब : गुनाहों की नुहूसत

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

सिने त़बाअ़त : रजबुल मुरज्जब, सि. 1435 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❁...अह़मदाबाद : फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद, गुजरात -1, फ़ोन : 9327168200

❁... मुम्बई : 19-20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 022-23454429

❁... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09373110621

❁.... अजमेर : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नल्ला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385

❁.... हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

❁... ह़ैदराबाद : मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

❁... कानपूर : मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, डिपटी का पडाव, गुर्बत पार्क, कानपूर, यू.पी. फ़ोन : 09335272252

❁... बनारस : मक्तबतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बा शाह की तक्या, मदन पूरा, बनारस, यू.पी. फ़ोन : 09369023101

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إن شاء الله عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़्हा नम्बर	उ़नवान	सफ़्हा नम्बर
किताब को पढ़ने की निय्यतें	7	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढील	24
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	8	गुनाहों को अच्छा समझना कुफ़्र है	24
आग़ाज़ तो अच्छा था मगर अन्जाम बहुत ही बुरा	8	चार इ़ब्रतनाक वाक़िआ़त	25
दुन्या एक ख़्वाब है	11	पहला वाक़िआ़	26
आ'माल की जवाब देही	13	दूसरा वाक़िआ़	26
गुनाहों के अ़ज़ाब से मुतअ़ल्लिक़ 5 आयाते मुक़द्दसा	14	तीसरा वाक़िआ़	27
		चौथा वाक़िआ़	28
गुनाहों से बचने के मुतअ़ल्लिक़ 6 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	15	गुनाह ख़ल्वत में हो या जल्वत में गुनाह है	29
		बनी इस्राईल पर मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबों का सबब	31
गुनाह किसे कहते हैं ?	18	दा'वते इस्लामी और गुनाहों के ख़िलाफ़ जंग	32
किस की ख़ुशी चाहिये रह़मान عَزَّوَجَلَّ की या शैत़ान की ?	19	गुनाहों का सबब बनने वाली चार सिफ़ात	33
		गुनाहों की अक़्साम	33
गुनाह आख़िर गुनाह है	20	गुनाहों की ता'दाद	35
गुनाह निफ़ाक़ की अ़लामत हैं	23	गुनाहों का अन्जाम	37
गुनाह भुलाया नहीं जाता	23	गुनाहों के दस नुक़्सान	38

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

बुरे ख़ातिमे का सबब	39	हसद को हसद क्यूं कहते हैं?	61
गुनाहों की ख़ौफ़नाक शक्लें	40	हसद से घरों की तबाही	62
गुनाहों के दुन्यावी नुक़्सान	41	हसद के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा	63
हक़ीक़त में कामयाब कौन?	42	हासिद का इ़ब्रतनाक अन्जाम	64
गुनाहों का इ़लाज	43	हसद का इ़लाज	67
गुनाहों के छे इ़लाज	43	(2) चुग़ली की नुहूसत	68
मुबल्लिग़ीन के लिये मदनी फूल	46	चुग़ल ख़ोर की बातों में न आइये	70
ख़ौफ़े गुनाह हो तो ऐसा!	47	चुग़ली से घर की बरबादी	71
नमाज़ गुनाहों से रोकती है	48	चुग़ली किसे कहते हैं?	73
दाढ़ी भी गुनाहों से रोकती है	49	क्या हम चुग़ली से बचते हैं?	73
गुनाहों से नजात के चन्द मुख़्तलिफ़ त़रीक़े	51	चुग़ली के मुतअ़ल्लिक़ 6 फ़रामीने मुस्तफ़ा	74
		चुग़ल ख़ोरी का इ़लाज	75
गुनाहों की दवा	53	चुग़ल ख़ोर कभी सच्चा नहीं हो सकता	76
गुनाह मिटाने का नुस्ख़ा	54	सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ का त़र्ज़े अ़मल	77
गुनाहों से बचने का एक और नुस्ख़ा	55	महब्बतों के चोरों से बचो	78
गुनाहों के ग्यारह इ़लाज	56	(3) शराब की नुहूसत	79
चार गुनाहों की निशान देही	58	शराब बुराइयों की अस्ल है	87
(1) हसद की नुहूसत	58	शराब के दस नुक़्सान	90
हसद क्या है?	60	मदनी माहोल और शराबियों की तौबा	93

मैं शराबी और चोर था	93	बा हया बाप के किरदार का असर	99
(4) बे हयाई की नुहूसत	95	बे हयाई के ख़िलाफ़ दा'वते इस्लामी की जंग	101
हया क्या है?	97		
बे हयाई की तबाही	97	दा'वते इस्लामी की बरकात	101
बे हयाई से नजात का त़रीक़ा	99	माख़ज़ो मराजेअ़	107

शैत़ान की शाबाश

ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है कि इबलीस ज़मीन में अपने लश्कर फैला देता है और उन से कहता है : तुम में से जिस ने किसी मुसलमान को गुमराह किया मैं उस के सर पर ताज पहनाऊंगा। पस इन में सब से ज़ियादा फ़ित्ने बाज़ उस का सब से ज़ियादा **क़रीबी** होता है। **एक** उस के पास आ कर कहता है : मैं फुलां शख़्स पर मुसल्लत रहा यहां तक कि उस ने बीवी को त़लाक़ दे दी। तो शैत़ान कहता है : तू ने कुछ नहीं किया, अ़न क़रीब वोह किसी दूसरी औ़रत से शादी कर लेगा। फिर **दूसरा** आ कर कहता है : मैं फुलां के साथ लगा रहा यहां तक कि मैं ने उस के और उस के भाई के दरमियान फूट डाल दी। शैत़ान कहता है : तू ने भी कुछ नहीं किया, अ़न क़रीब वोह आपस में सुल्ह़ कर लेंगे। फिर **तीसरा** आ कर कहता है : मैं फुलां के साथ चिमटा रहा यहां तक कि उस ने बदकारी कर ली। तो इब्लीस मलऊ़न कहता है : तू ने बहुत अच्छा काम किया। पस वोह उसे अपने क़रीब कर के उस के सर पर ताज रख देता है। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب التاریخ، باب بدء الخلق، ۸/ ۲۴، حدیث: ۶۱۵۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें शैत़ान और उस के लश्कर के शर से पनाह अ़त़ा फ़रमाए। (आमीन)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"गुनाहों से दूर रहो" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "14 नियतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी "मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر، ۶/ ۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

﴿1﴾ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार ह़म्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअ़व्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से इन निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴿5﴾ रिज़ाए इलाही के लिये इस रिसाले का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴿6﴾ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴿7﴾ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴿8﴾ क़ुरआनी आयात और ﴿9﴾ अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴿10﴾ जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ ﴿11﴾ और जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴿12﴾ इस ह़दीषे पाक "تَهَادَوا تَحَابُّوا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، ۲/ ۴۰۷، حدیث: ۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह रिसाला ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा ﴿13﴾ गुनाहों से बचूंगा ﴿14﴾ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्त़लअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

गुनाहों की नुहूसत(1)

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूद पढ़ कर आरास्ता करो कि तुम्हारा मुझ पर दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आग़ाज़ तो अच्छा था मगर अन्जाम बहुत ही बुरा

एक शख़्स बिस्तर पर लैटा ग़फ़लत की गहरी नींद सो रहा था कि ख़्वाबों की दुन्या में पहुंच गया, क्या देखता है कि वोह एक वसीओ अ़रीज़, सर सब्ज़ो शादाब जंगल में है, जंगल का हुस्न जौबन पर है, हर त़रफ़ अ़जब ख़ुश रंग फूल खिले हैं जिन से टकरा

---

1 ....मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रत मौलाना ह़ाजी अबू ह़ामिद मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي ने येह बयान सि. 1426 हि. ब मुत़ाबिक़ सि. 2005 ई. को हिन्द (इन्डिया) में तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में फ़रमाया। 12 रबीउ़ष्षानी सि. 1434 हि. ब मुत़ाबिक़ 23 फ़रवरी 2013 ई. को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है।
(शो'बए रसाइले दा'वते इस्लामी **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**)

2 فردوس الاخبار، ۱/ ۴۲۲، حدیث: ۳۱۴۹

कर आती ख़ुंक (ठन्डी) हवा के झोंके मशामे जां को मुअ़त्तर कर रहे हैं, रंग बे रंगे परन्दों की चहचहाहट मन्ज़र में मज़ीद रंग भर रही है, वोह जंगल के उन ह़सीन नज़्ज़ारों में कुछ इस तरह़ खो गया कि उसे जंगल की वह़्शत का एह़सास रहा न जंगली दरिन्दों का कोई डर। वोह शख़्स इन ख़ूबसूरत मनाज़िर की दिल कशी व रा'नाई से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हुवे जंगल में चलता जा रहा था कि दफ़्अ़तन उसे अपने पीछे कुछ आहट महसूस हुई, मुड़ कर जो देखा तो घात लगाए एक ख़ौफ़नाक शेर नज़र आया, शेर को देख कर गोया उस के **पाउं तले से ज़मीन नीकल गई** और वोह घबरा कर भाग खडा हुवा मगर शेर भी आख़िर शेर था, अपने शिकार का कहां पीछा छोड़ने वाला था, वोह भी उस के पीछे हो लिया गोया कि उसे जान बूझ कर भागने का मौक़अ़ दे रहा हो कि आख़िर मुझ से बच कर कहां जाओगे ? भाग लो जहां तक भागना है। वोह शख़्स शेर से पीछा छुड़ाने की फ़िक्र में अन्धा घुन्द भागे चला जा रहा था कि इतने में एक गहरा गढ़ा आडे आ गया, उस ने गढ़े में झांक कर देखा तो अन्दर एक बहुत बड़ा सांप मुंह खोले बैठा नज़र आया। अब तो येह मज़ीद डरा कि करे तो क्या करे। पीछे ख़ौफ़नाक शेर है तो आगे गढ़े में ख़त़रनाक सांप....!

अभी इसी उधेड़ बुन में था कि उसे एक बहुत बड़ा दरख़्त नज़र आया जिस की बहुत सी मज़बूत़ शाखें ज़मीन पर लटक रही थी, जान बचाने की ख़ात़िर उस के ज़ेह्न में दरख़्त पर चढ़ने का ख़याल आया तो फ़ौरन एक शाख़ पकड़ कर उस पर चढ़ बैठा

गोया येह शाख़ उस के लिये ह़याते नव (नई ज़िन्दगी) का पैग़ाम षाबित हुई। अभी उस ने शेर और सांप से जान बच जाने की ख़ुशी में सांस भी न लिया था कि उसे महसूस हुवा कि जिस शाख़ पर वोह बैठा है कोई उसे कुतरने की कोशिश कर रहा है, ग़ौर से देख ने पर उसे मा'लूम हुआ कि जिस शाख़ पर वोह जान बचाने की ग़रज़ से बैठा था, चूहे नुमा दो छोटे छोटे जानवर मिल कर उसे कुतरने की कोशिश कर रहे हैं, इन जानवरों में से एक दिन की रोशनी की मानिन्द सफ़ेद और दूसरा रात की तारीकी की त़रह़ सियाह (काला) था, इन दोनों जानवरों को चूहों की तरह़ ह़क़ीर जानते हुवे कि भला इन की क्या अवक़ात कि इतनी मज़बूत़ शाख़ को काट सकें, उस ने कोई परवाह न की बल्कि जान बच जाने पर सुख का सांस लिया, मगर येह देख कर कि शेर भी इसी शाख़ तले आ बैठा है वोह कुछ ज़रूर परेशान हुवा लेकिन येह सोच कर कि वोह शेर की पहुंच से दूर है और वोह उस का कुछ नहीं बिगाड़ सकता मुत़मइन हो गया। इतने में उस की नज़र पास ही शहद से भरे एक छत्ते पर पड़ी, शहद देख कर उस के मुंह में पानी भर आया और तमाम ख़त़रात को ज़ेह्न से झटकते हुवे वोह ख़ुद को शहद की मिठास से ज़ियादा देर तक दूर न रख पाया और आख़िर किसी तरकीब से शहद ह़ासिल करने में कामयाब हो ही गया। बोह शख़्स शहद की लज़्ज़त में कुछ ऐसा खोया कि उसे न तो शाख़ कुतरने वाले चूहे नुमा जानवरों का ख़याल रहा और न ही नीचे मौजूद शेर का। मगर होनी को कौन टाल सकता है ! जिन चूहे नुमा

जानवरों को उस ने हक़ीर जान कर नज़र अन्दाज़ किया था, उन्हों ने अपना काम कर दिखाया और वोह शाख़ काटने में कामयाब हो ही गए, जूंही शाख़ के चटख़ने की आवाज़ उस के कानो में पहुंची शहद की मिठास कड़वाहट में बदल गई। शाख़ क्या टूटी वोह शख़्स धड़ाम से नीचे गिरा और शेर ने एक ही वार में उसे मौत के घाट उतार दिया, वोह लुढ़कता हुवा गढ़े में गिरा तो साप ने फ़ौरन उसे अपने शिकन्जे में ले कर आहिस्ता आहिस्ता निगलना शुरुअ कर दिया। इतने में उस की आंख खुल गई और वोह हुड़बड़ा कर उठ बैठा और सोचने लगा कि येह ख़्वाब कैसा था जिस का **आगाज़ तो अच्छा था मगर अन्जाम बहुत ही बुरा !!!**

दुन्या एक ख़्वाब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिन लोगों की आंखों पर गफ़्लत की पट्टी बन्धी होती है उन के लिये "**दुन्या**" मज़कूरा शख़्स के ख़्वाब में नज़र आने वाले जंगल की त़रह़ है, वोह दुन्या की रंगीनियों में मगन हो कर अपनी हस्ती से भी ग़ाफ़िल हो जाते हैं, फिर वोह दुन्या की बे षबाती से डरते हैं न जंगल के दरिन्दे की त़रह़ इर्द गिर्द मन्डलाती मौत की कोई परवाह करते हैं। अगर दुन्या के इस जंगल में मंगल मनाते हुवे कभी येह एह़सास पैदा होता भी है कि शेर की त़रह़ "**मौत**" घात लगाए बैठी है तो फ़ौरन राहे फ़िरार इख़्तियार करने की कोशिश करते हैं मगर येह नहीं जानते कि "**क़ब्र**" का हौलनाक गढ़ा रास्ते में ह़ाइल है जिस में उन की

बद आ'मालियां "**सांपों**" की शक्ल में मुंह खोले उन्हें निगलने के लिये तय्यार बैठी हैं। अगर ख़ुश क़िस्मती से किसी दरख़्त की शाख़ आ जाने से "**ज़िन्दगी**" की कुछ सांसें बढ़ जाती हैं तो येह गुमान कर के कि शायद उन्हों ने मौत और क़ब्र से पीछा छुडा लिया है सुख का सांस लेते हैं और इस बात की भी परवाह नहीं करते कि उन की ज़िन्दगी की शाख़ दो नन्हे जानवर "**दिन-रात**" की शक्ल में आहिस्ता आहिस्ता कुतर रहे हैं और बस किसी आन उन की ज़िन्दगी की येह शाख़ कटने ही वाली है, बल्कि शहद की सूरत में मीठी दिखाई देने वाली "**दुन्यावी लज़्ज़तों**" में वोह इस क़दर खो जाते हैं कि मौत का डर तक बाक़ी नहीं रहता। मगर जब रात दिन आहिस्ता आहिस्ता उन की ज़िन्दगी की शाख़ को काट देते हैं और उन्हें यकदम शाख़ के चटख़ने या'नी आ़लमे नज़्अ़ में मौत के फ़िरिश्ते की आवाज़ सुनाई देती है तो उन के अवसान ख़ता हो जाते हैं और वोह हक्के बक्के रह जाते हैं, आख़िर ज़िन्दगी की शाख़ कटती है तो मौत का फ़िरिश्ता उन की रूह़ क़ब्ज़ कर लेता है और उन का जिस्म जब क़ब्र के हौलनाक गढ़े में जाता है तो उन की बद आ'मालियां सांप की शक्ल में आगे बढ़ कर उन का इस्तिक़बाल करती हैं।

वोह है ऐशो इशरत का कोई महल भी जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जहल से तू निकल भी येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इबरत की जा है तमाशा नहीं है

आ'माल की जवाब देही

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें येह ज़िन्दगी खेल कूद और तफ़रीह़ के लिये नहीं बल्कि ऐसे काम करने के लिये दी गई है जिन की बजा आवरी से रिज़ाए रब्बुल अनाम ह़ासिल हो। चुनान्चे, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

اِنَّ الدُّنْيَا خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ وَاِنَّ اللّٰهَ مُسْتَخْلِفُكُمْ فِيهَا فَنَاظِرٌ كَيْفَ تَعْمَلُونَ

बेशक दुन्या सर सब्ज़ो शादाब और शीरीं है और यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम को इस में अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला है ताकि वोह येह देख सके कि तुम इस में कैसे आ'माल बजा लाते हो।[1]

पस याद रखिये ! मौत के बाद हर शख़्स अपनी करनी का फल पाएगा, अगर दुन्या में अच्छे आ'माल किये होंगे तो उस की जज़ा पाएगा और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता नफ़्सो शैत़ान के बहकावे में आ कर ज़िन्दगी गुनाहों में बसर की तो जहन्नम की सज़ा का मुस्तह़िक़ ठहरेगा। जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝ (پ۳۰، الزلزال: ۷، ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा ।*

1 ابن ماجه، کتاب الفتن، باب فتنة النساء، ۴/ ۳۵۷، حدیث: ۴۰۰۰

गुनाहों के अ़ज़ाब से मुतअ़ल्लिक़ 5 आयाते मुक़द्दसा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों को अपनी रबूबिय्यत के अस्रार सिखा कर अपनी नाफ़रमानी से डराया है। चुनान्चे इस सिलसिले में पांच फ़रामीने बारी तआ़ला पेशे ख़िदमत हैं :

1 فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ

(پ۲۵، الزخرف: ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब उन्हों ने वोह किया जिस पर हमारा ग़ज़ब उन पर आया।*

2 فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿۱۶۶﴾

(پ۹، الاعراف: ۱۶۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब उन्हों ने मुमानअ़त के हुक्म से सरकशी की हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर दुत्कारे (धुत्कारे) हुवे।*

3 وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ

(پ۲۲، فاطر: ۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर अल्लाह लोगों को उन के किये पर पकड़ता तो ज़मीन की पीठ पर कोई चलने वाला न छोड़ता।*

4 وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۱۱۵﴾

(پ۵، النسآء: ۱۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो रसूल का ख़िलाफ़ करे बा'द उस के कि हक़ रास्ता उस पर खुल चुका और मुसलमानों की राह से जुदा राह चले हम उसे उस के हाल पर छोड़ देंगे और उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और क्या ही बुरी जगह पलटने की।*

5 مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ (پ۵،النسآء:۱۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा और अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न मददगार।

गुनाहों से बचने के मुतअ़ल्लिक़ 6 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुछ फ़राइज़ اِنَّ اللّٰهَ فَرَضَ فَرَائِضَ فَلَا تُضَيِّعُوْهَا मुक़र्रर किये हैं उन्हें ज़ाएअ़ न करो, وَحَرَّمَ حُرُمَاتٍ فَلَا تَنْتَهِكُوْهَا कुछ चीज़ें ह़राम की हैं उन्हें हलका न जानो, وَحَدَّ حُدُوْدًا فَلَا تَعْتَدُوْهَا और कुछ ह़दें क़ाइम की हैं उन से आगे न बढ़ो, وَسَكَتَ عَنْ أَشْيَآءَ مِنْ غَيْرِ نِسْيَانٍ فَلَا تَبْحَثُوْا عَنْهَا और उस ने (तुम पर रह़मत फ़रमाते हुवे) दानिस्ता कुछ चीज़ों से सुकूत फ़रमाया है उन की जुस्तजू न करो।(1)

(2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़यूर है और मोमिन भी ग़ैरत मन्द है जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ग़ैरत इस बात पर है कि बन्दए मोमिन उस के ह़राम कर्दा अ़मल में पड़े।(2)

---

1 دارقطنی، کتاب الرضاع، ۴/۲۱۷، حدیث:۴۳۵۰

2 مسلم، کتاب التوبۃ، باب غیرۃ اللہ تعالٰی۔۔۔ الخ، ص۱۴۷۶، حدیث:۲۷۶۱

(3) لَا اَحَدَ اَغْيَرُ مِنَ اللّٰهِ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा ग़ैरत वाला कोई नहीं, وَلِذٰلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ इसी लिये उस ने ज़ाहिरी व बातिनी फ़वाहिश को हराम कर दिया है।[1]

(4) हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की वालिदा हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सुलैम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कुछ वसिय्यत फ़रमाइये। तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اُهْجُرِى الْمَعَاصِىَ فَاِنَّهَا اَفْضَلُ الْهِجْرَةِ गुनाहों से हिजरत कर लो (या'नी इन्हें छोड़ दो) क्यूंकि येह सब से अफ़्ज़ल हिजरत है, وَحَافِظِى عَلَى الْفَرَائِضِ فَاِنَّهَا اَفْضَلُ الْجِهَادِ फ़राइज़ की पाबन्दी करती रहो क्यूंकि येह सब से अफ़्ज़ल जिहाद है, وَاَكْثِرِى مِنْ ذِكْرِ اللّٰهِ فَاِنَّكِ لَا تَاْتِى اللّٰهَ بِشَىْءٍ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ كَثْرَةِ ذِكْرِهٖ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कषरत से ज़िक्र करती रहो क्यूंकि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कषरते ज़िक्र से ज़ियादा पसन्दीदा कोई शै ले कर हाज़िर नहीं होगी।[2]

---

1 مسلم، کتاب التوبة، باب غیرة اللہ تعالٰی ۔۔۔ الخ، ص۱۴۷۶، حدیث: ۳۴- (۲۷۶۰)

2 المعجم الکبیر، ۲۵/ ۱۲۹، حدیث: ۳۱۳

(5) हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! اَیُّ الْھِجْرَۃِ اَفْضَلُ؟ कौन सी हिजरत अफ़्ज़ल है ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ ھَجَرَ السَّیِّئَاتِ जिस ने गुनाहों से हिजरत की। (1)

(6) मोमिन जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता बन जाता है फिर अगर वोह तौबा करे और (गुनाह से) अलग हो जाए और बख़्शिश चाहे तो उस का दिल साफ़ कर दिया जाता है और अगर (तौबा न करे बल्कि) गुनाहों में ज़ियादती का मुरतकिब हो तो वोह नुक्ता फैल जाता है।(2) हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर हैतमी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : वोह सियाह नुक्ता (गुनाहों की कषरत की वजह से आहिस्ता आहिस्ता) पूरे दिल को ढांप लेता है और येह वोही ज़ंग है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी किताब में इस त़रह़ ज़िक्र फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (پ۳۰، المطففین: ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन कि कमाइयों ने।* (3)

1 الاحسان بترتیب صحیح ابن حبّان، کتاب البر والاحسان، ذکر الاستحباب للمرء ان یکون ۔۔الخ، ۱/۲۸۷، حدیث: ۳۶۲

2 ابن ماجه، کتاب الزهد، باب ذکر الذنوب، ۴/ ۴۸۸، حدیث: ۴۲۴۴

3 الزواجر عن اقتراف الکبائر، خاتمہ: فی التحذیر من جملة المعاصی۔۔الخ، ۱/ ۲۶

गुनाह किसे कहते हैं ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन अ़क़्ल मन्द वोही है जिस के दिलो दिमाग़ में गुनाहों की तबाहकारियां रासिख़ हों और वोह ख़ुद को न सिर्फ़ इन से बचाए बल्कि नेकियां कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करे मगर अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! दीन से दूरी की बिना पर आज एक मुसलमान का गुनाहों से बचना तो दूर की बात है उस को तो येह भी मा'लूम नहीं कि कौन कौन से काम गुनाह हैं ? इस ला इ़ल्मी का नतीजा हमारे सामने है कि चहार जानिब गुनाहों का बाज़ार गर्म है, जिस त़रफ़ नज़र उठाइये बे अ़मली व बे राह रवी का दौर दौरा है ह़ालांकि अह़कामे ख़ुदावन्दी से मुंह मोड़ने का नतीजा सिवाए तबाही व बरबादी के कुछ नहीं है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना नव्वास बिन सम्आ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से **नेकी** और **गुनाह** के मुतअ़ल्लिक़ पूछा (कि येह क्या हैं ?) तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَلْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ وَالْاِثْمُ مَا حَاكَ فِیْ صَدْرِكَ وَكَرِهْتَ اَنْ یَّطَّلِعَ عَلَیْهِ النَّاسُ (1)

1 .....येह फ़रमान कामिल मुसलमानों के लिये है। जैसे हम को मख़्खी ह़ज़्म नहीं होती फ़ौरन क़ै हो जाती है यूंही सालिह़ीन को गुनाह ह़ज़्म नहीं होता फ़ौरन उन्हें दिली फ़ैज़, रूह़ानी तक्लीफ़ मह़सूस होती है। आ़म लोगों का येह ह़ाल नहीं बा'ज़ तो गुनाह पर ख़ुश हो कर ए'लान करते हैं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़कीमे मुत़लक़ हैं, हर शख़्स को उस के मुत़ाबिक़ दवा अ़त़ा फ़रमाते हैं। यूंही **अन्नास** से मुराद मक़्बूल बन्दे हैं। इमाम नववी ने ह़ज़रते वाबिसा इब्ने मुई़द असदी से रिवायत की, कि मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि नेकी और गुनाह क्या होते हैं ? फ़रमाया : अपने दिल से फ़त़वा लिया करो, जिसे तुम्हारा दिल **नेकी** कहे वोह **नेकी** है जिसे तुम्हारा दिल **गुनाह** कहे वोह **गुनाह** है। (मिरआतुल मनाजिह़, 6-639)

नेकी अच्छे अख़्लाक़ का नाम है और गुनाह से मुराद हर वोह बात है जो तेरे दिल में खटके और तू बुरा समझे कि लोग उस पर मुत्तलअ़ हों।[1] और सलफ़े सालिहीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं कि गुनाह कुफ़्र के क़ासिद हैं इस ए'तिबार से कि येह दिल में सियाही पैदा कर के (आहिस्ता आहिस्ता) उसे इस त़रह़ ढांप लेते हैं कि फिर उस में भलाई क़बूल करने की सलाहिय्यत बाक़ी नहीं रहती, उस वक़्त वोह सख़्त हो जाता है और उस से रह़मत व मेहरबानी और ख़ौफ़ निकल जाता है फिर वोह शख़्स जो चाहता है कर गुज़रता है और जिसे पसन्द करता है उस पर अ़मल करता है, नीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में शैत़ान को अपना दोस्त बना लेता है तो वोह शैत़ान उसे गुमराह करता, वरग़लाता, झूटी उम्मीदें दिलाता और जिस क़दर मुमकिन हो कुफ़्र से कम किसी बात पर उस से राज़ी नहीं होता।[2]

किस की ख़ुशी चाहिये रह़मान عَزَّوَجَلَّ की या शैत़ान की ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकी या गुनाह के दोनों रास्ते आप के सामने हैं, अब फ़ैसला आप ने ख़ुद ही करना है कि आप क्या चाहते हैं फ़रमां बरदारी के रास्ते पर चलते हुवे रह़मान عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी आप को मत़लूब है या शैत़ान की ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिये गुनाहों की दलदल में धंसना चाहते हैं ? याद रखिये ! नेकी

1 مسلم، کتاب البر...الخ، باب تفسیر البر والاثم، ص ۱۳۸۲، حدیث: ۲۵۵۳

2 الزواجر عن اقتراف الکبائر، مقدمة فی تعریف الکبیرة، خاتمة فی التحذیر۔۔الخ، ۲۸/۱

के रास्ते पर चलेंगे तो रिज़ाए रब्बुल अनाम के साथ साथ बे शुमार बरकतों से भी नवाज़े जाएंगे और अगर गुनाह व नाफ़रमानी के रास्ते को अपनाएंगे तो शैतान की फ़रमां बरदारी और रहमान عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी के सबब ला'नत का तौक़ आप का मुक़द्दर बन जाएगा। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बनी इस्राईल की तरफ़ वही फ़रमाई : बन्दा जब मेरी इताअ़त करता है तो मैं उस से राज़ी हो जाता हूं और जब मैं उस से राज़ी हो जाता हूं तो उसे बरकतें अ़ता फ़रमाता हूं। (बा'ज़ रिवायतों में है कि मेरी बरकत की कोई इन्तिहा नहीं) और जब बन्दा मेरी नाफ़रमानी करता है तो मैं उस से नाराज़ हो जाता हूं और जब मैं उस से नाराज़ होता हूं तो उस पर ला'नत फ़रमाता हूं और मेरी ला'नत उस की सात पुश्तों तक पहुंचती है।[1] اَلْاَمَان وَالْحَفِیْظ हम इस बात से पनाह मांगते हैं कि हमारा शुमार उन लोगों में हो जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ला'नत फ़रमाई है।

गुनाह आख़िर गुनाह है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाह छोटा हो या बड़ा आख़िर गुनाह ही होता है। क्यूंकि गुनाह चाहे कितना ही छोटा हो अगर उस पर पकड़ हुई तो ख़ुदा की क़सम ! उस का अ़ज़ाब न सहा

1 الزواجر عن اقتراف الکبائر، مقدمة فی تعریف الکبیرة، خاتمة فی التحذیر۔۔۔الخ، ۱/۲۸

जा सकेगा। चुनान्चे गुनाहों की सज़ा से डराते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی (मुतवफ़्फ़ा 973 हि.) नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : पांच दिरहम (अह़नाफ़ के नज़दीक दस दिरहम) की चोरी पर हाथ काटा जाता है और इस में शक नहीं कि तुम्हारा सब से छोटा गुनाह भी पांच दिरहम की चोरी से तो ज़ियादा ही क़बीह़ (या'नी बुरा) है, लिहाज़ा तुम्हारे हर गुनाह के बदले आख़िरत में तुम्हारा एक उ़ज़्व काटा जाएगा।[1] और ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡه फ़रमाते हैं : गुनाह के छोटा होने को न देखो बल्कि येह देखो कि तुम किस की नाफ़रमानी कर रहे हो ?[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने जौज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक फ़रमाने आ़लीशान कुछ यूं नक़्ल फ़रमाते हैं : "ऐ इब्ने आदम ! तू कितना मजबूर है ! मुझ से मांगता है तो मैं अ़ता नहीं करता क्यूंकि मैं जानता हूं कि तेरे ह़क़ में क्या बेहतर है, फ़िर जब तू मुझ से मांगने में इसरार करता है तो मैं तुझ पर रह़्मो करम की नज़र फ़रमाता हूं और तेरी मांगी हुई शै तुझे अ़ता फ़रमा देता हूं, फिर जब तू मेरी अ़ताकर्दा शै पा कर मेरी नाफ़रमानी करने लगता

---

1 تنبیهُ المغترّین، ص ۱۷۲

2 الزواجر عن اقتراف الکبائر، مقدمة فی تعریف الکبیرة، خاتمة فی التحذیر۔۔۔الخ، ۱/ ۲۷

है तो मैं तुझे ज़लीलो रुस्वा कर देता हूं। मैं किस क़दर तेरी बेहतरी चाहता हूं और तू मेरी कितनी ना फ़रमानियां करता है ! क़रीब है कि मैं तुझ से ऐसा नाराज़ हो जाऊं कि इस के बाद कभी राज़ी न होऊं।" इस के बाद मज़ीद एक फ़रमाने आ़लीशान कुछ यूं नक़्ल फ़रमाते हैं : "ऐ मेरे बन्दे ! तू कब तक मेरी नाफ़रमानी करता रहेगा हालांकि मैं ने तुझे अपना रिज़्क़ खिलाया और तुझ पर एह़सान किया, क्या मैं ने तुझे अपने दस्ते कुदरत से पैदा नहीं फ़रमाया ? क्या मैं ने तुझ में रुह़ नहीं फूंकी ? क्या तू नहीं जानता कि मैं अपनी इत़ाअ़त करने वालों के साथ कैसा मुआ़मला फ़रमाता हूं और अपनी ना फ़रमानी करने वालों की कैसी गिरिफ़्त फ़रमाता हूं ? क्या तुझे ह़या नहीं आती कि मसाइब में मुझे याद करता है मगर खुशह़ाली में भूल जाता है ? नफ़्सानी ख़्वाहिशात ने तेरी चश्मे बसीरत को अन्धा कर दिया है, तू कब तक सुस्ती करेगा ? अगर तू अपने गुनाह से तौबा करेगा तो मैं तुझे अपनी अमान दूंगा, ऐसे घर को छोड़ दे जिस की सफ़ाई (ह़क़ीक़त में) मैलापन और उम्मीदे झूटी हैं। तू ने मेरे कुर्ब को धटया शै के इ़वज़ बेच दिया हालांकि मेरा कोई शरीक नहीं, तेरे पास उस वक़्त क्या जवाब होगा जब तेरे आ'ज़ा तेरे ख़िलाफ़ गवाही देंगे जिसे तू सुनेगा और देखेगा।"[1]

1 بحر الدموع، مقدمة المؤلف، ص ۱۴

गुनाह निफ़ाक़ की अ़लामत हैं

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان नूरुल इरफ़ान सफ़ह़ा 318 पर फ़रमाते हैं : जिस को गुनाह आसान मा'लूम हों और नेक काम भारी, समझो उस के दिल में निफ़ाक़ है, रब तआ़ला मह़फ़ूज़ रखे।[1]

गुनाह भुलाया नहीं जाता

प्यारे इस्लामी भाइयो ! क्या अब भी गुनाहों से बाज़ न आएंगे ? क्या अब भी नेकी की दा'वत पर لَبَّيْك कहते हुवे बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर न होंगे ? याद रखिये ! आप की हर नेकी और गुनाह लिखा जा रहा है, रोज़े क़ियामत आप अपने नामए आ'माल में कोई नेकी ज़ियादा पाएंगे न कोई गुनाह कम, लिहाज़ा इस फ़ानी ज़िन्दगी में हमेशगी की ज़िन्दगी के लिये ज़ियादा से ज़ियादा ज़ादे राह इकठ्ठा फ़रमा लीजिये। वरना याद रखिये उस दिन पछतावे के सिवा कुछ हाथ न आएगा। क्यूंकि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बि इज़्ने परवरदगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : नेकी पुरानी नहीं होती और गुनाह भुलाया नहीं जाता, जज़ा देने वाला (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) कभी फ़ना न होगा, लिहाज़ा जो चाहे करो,

मगर याद रखो !..... **"जैसा करोगे, वैसा भरोगे।"**[2]

---

1 نور العرفان، پ١٠، التوبة، تحت الآیة: ٨١، ص٣١٨

2 مصنف عبد الرزاق، کتاب الجامع باب الاغتیاب والشتم، ١٠/ ١٨٩، حدیث: ٢٠٤٣٠

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ढील

हज़रते सय्यिदुना उ़क़बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले मोहतशम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इबरत निशान है : "जब तुम किसी बन्दे को देखो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को अ़ता फ़रमाता है और वोह अपने गुनाह पर क़ाइम है तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ढ़ील है।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुक़द्दसा तिलावत फ़रमाई :

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَیْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿۴۴﴾

(پ۷، الانعام: ۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीह़तें उन को की गई थीं हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब ख़ुश हुवे उस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह गए।* (1)

गुनाहों को अच्छा समझना कुफ़्र है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان नूरुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि तमाम अ़ज़ाबों में सख़्ततर अ़ज़ाब दिल की

1 مسند احمد، ۶/ ۱۲۲، حدیث: ۱۷۳۱۳

सख़्ती है जिस से ता'लीमे नबी अषर न करे । इस (आयते मुबारका) से मा'लूम हुवा कि गुनाह व मआ़सी के बावुजूद दुन्यावी राह़ते मिलना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब और अ़ज़ाब है कि इस से इन्सान और ज़ियादा ग़ाफ़िल हो कर गुनाह पर दिलेर हो जाता है। बल्कि कभी ख़याल करता है कि गुनाह अच्छी चीज़ है वरना मुझे येह ने'मतें न मिलतीं येह कुफ़्र है । (या'नी गुनाह को गुनाह तस्लीम करना फ़र्ज़ है इस को जान बूझ कर अच्छा कहना या अच्छा समझना कुफ़्र है) येह भी मा'लूम हुवा कि नेक कार (या'नी नेक बन्दों) पर तकालीफ़ आना रह़मते इलाही का ज़रीआ़ है कि इस से उस सालेह़ (या'नी नेक बन्दे) के दरजात बुलन्द होते हैं ।[1]

चार इ़ब्रतनाक वाक़िआ़त

शैख़ुल इस्लाम, शहाबुद्दीन इमाम अह़मद बिन ह़जर हैतमी मक्की शाफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي (मुतवफ़्फ़ा **974** हि.) ने गुनाहों की ह़क़ीक़त के मुतअ़ल्लिक़ **अज़्ज़वाजिर अ़निक़्तिराफ़िल कबाइर** नामी एक किताब लिखी है, जिस का तर्जमा बनाम **जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने शाएअ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की है। गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद जानने के लिये दो जिल्दों पर मुश्तमिल इस किताब का मुत़ालआ़ ज़रूर कीजिये, इ़ब्रत के लिये इस किताब की जिल्द अव्वल (के सफ़ह़ा **69** ता **70**) से गुनाहों की वजह से होने वाले अ़ज़ाब पर मुश्तमिल चार इ़ब्रतनाक वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

1 نورُ العرفان، پ۹، الانعام، تحت الآیۃ: ۴۴، ص ۲۱۰

पहला वाक़िआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं चांद की इब्तिदाई रातों में क़ब्रिस्तान के पास से गुज़रा तो मैं ने एक शख़्स को क़ब्र से निकलते हुवे देखा, वोह ज़न्जीर खींच रहा था, फिर मैं ने देखा कि एक और शख़्स उस ज़न्जीर को पकड़े हुवे है और उस दूसरे ने बाहर निकलने वाले शख़्स को अपनी त़रफ़ खींचा और उसे क़ब्र में लौटा दिया, फिर मैं ने उसे उस मुर्दे को मारते हुवे देखा और मुर्दा कह रहा था : क्या मैं नमाज़ नहीं पढ़ता था ? क्या मैं जनाबत से ग़ुस्ल नहीं करता था ? क्या मैं रोज़े नहीं रखता था ? तो उस मारने वाले ने जवाब दिया : हां ! क्यूं नहीं (तू वाक़ेई येह काम तो करता था) मगर जब **तू तन्हाई में गुनाह किया करता था तो उस वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता था ।**

दूसरा वाक़िआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं मौत और मरने के बा'द हड्डियों की) बोसीदगी को याद करने के लिये कषरत से क़ब्रिस्तान में आता जाता था, एक रात मैं क़ब्रिस्तान में था कि मुझ पर नींद ग़ालिब आ गई और मैं सो गया तो मैं ने ख़्वाब में एक खुली हुई क़ब्र देखी और एक कहने वाले को येह कहते हुवे सुना : येह ज़न्जीर पकड़ो और इस के मुंह में दाख़िल कर

के इस की शर्मगाह से निकालो। तो वोह मुर्दा कहने लगा : या रब عَزَّوَجَلَّ क्या मैं कुरआन नहीं पढ़ा करता था ? क्या मैं तेरे हुर्मत वाले घर का ह़ज नहीं करता था ? फिर वोह इसी त़रह़ एक के बा'द दूसरी नेकी गिनवाने लगा तो मैं ने एक कहने वाले को येह कहते हुवे सुना : तू लोगों के सामने येह आ'माल किया करता था लेकिन जब तू **तन्हाई में होता तो नाफ़रमानियों के ज़रीए मुझ से ए'लाने जंग करता और मुझ से नहीं डरता था।**

तीसरा वाक़िआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मदीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : हमारा एक दोस्त था। उस ने हमें बताया कि मैं अपनी ज़मीन की त़रफ़ जा रहा था कि रास्ते में नमाज़े मग़रिब का वक़्त हो गया तो मैं क़रीब के एक क़ब्रिस्तान के पास आया और नमाज़े मग़रिब अदा कर के अभी वहीं बैठा हुवा था कि मैं ने क़ब्रिस्तान की त़रफ़ से रोने की एक आवाज़ सुनी। जिस क़ब्र से रोने की आवाज़ आ रही थी मैं उस के क़रीब गया तो सुना कि वोह मुर्दा कह रहा था : आह ! **बेशक मैं रोज़े रखा करता और नमाज़ पढ़ा करता था**। येह सुन कर मुझ पर कप-कपी त़ारी हो गई तो मैं ने क़रीब के लोगों को बुलाया तो उन्हों ने भी वोह बातें सुनीं, इस के बा'द मैं अपनी ज़मीन की त़रफ़ चला गया और जब दूसरे दिन वापस आ कर उसी जगह नमाज़ पढ़ी। फिर ग़ुरूबे आफ़्ताब के इन्तिज़ार में वहीं ठहरा रहा, फिर नमाज़े मग़रिब अदा कर के क़ब्र की जानिब कान लगा कर सुना कि वोह मुर्दा रोते हुवे कह रहा

है : आह ! मैं नमाज़ पढ़ा करता था, मैं रोज़े रखा करता था। इस के बा'द मैं अपने घर लौट आया और दो महीने मुसलसल बुख़ार में तपता रहा।

चौथा वाक़िआ

(हज़रते सय्यिदुना इब्ने हजर हैतमी मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :) इसी तरह का एक वाक़िआ मेरे साथ भी पेश आया था, हुवा यूं कि जब मैं छोटा था तो पाबन्दी से अपने वालिद साहिब رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की क़ब्र पर हाज़िरी दिया करता और कुरआने पाक की तिलावत किया करता था। एक मरतबा रमज़ानुल मुबारक में नमाज़े फ़ज्र के फ़ौरन बा'द क़ब्रिस्तान गया, ग़ालिबन वोह रमज़ान का आख़िरी अ़शरा बल्कि शबे क़द्र थी, उस वक़्त क़ब्रिस्तान में मेरे इलावा कोई न था। बहर हाल अभी मैं ने अपने वालिद साहिब رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की क़ब्र के क़रीब बैठ कर कुरआने पाक का कुछ हिस्सा ही पढ़ा था कि अचानक शदीद आहो बुका और रोने धोने की आवाज़ सुनी, रोने वाला बार बार "आह ! आह ! आह !" कह रहा था, चूने से तय्यार शुदा चमकदार सफ़ेद क़ब्र से निकलने वाली इस आवाज़ ने मुझे घबराहट में मुब्तला कर दिया तो मैं क़िराअत छोड़ कर वोह आवाज़ सुनने लगा। मैं ने क़ब्र के अन्दर से अ़ज़ाब की आवाज़ सुनी, अ़ज़ाब में मुब्तला शख़्स इस तरह आहो ज़ारी कर रहा था जिसे सुनने से दिल में क़लक़ (बे क़रारी) और घबराहट पैदा हो रही थी, मैं कुछ देर तक वोह आवाज़ सुनता रहा फिर जब

दिन ख़ूब रोशन हो गया तो वोह आवाज़ सुनाई देना बन्द हो गई। फिर जब एक शख़्स मेरे क़रीब से गुज़रा तो मैं ने उस से पूछा : येह किस की क़ब्र है? तो उस ने बताया : येह फुलां की क़ब्र है। मैं ने उस शख़्स को बचपन में देखा था, वोह कषरत से मस्जिद आता जाता, नमाज़ों को अपने अवक़ात में अदा करता और बेजा गुफ़्तगू से परहेज़ किया करता था, मैं ने चूंकि उसे देखा हुवा था, लिहाज़ा उसे पहचान गया, लेकिन उस शख़्स की इस मौजूदा हालत ने मुझ पर बहुत गहरा अषर डाला और मुझे मा'लूम हो गया कि उस ने ज़िन्दगी में आ'माले सालेहा को महज़ अपना ज़ाहिरी लुबादा बना रखा था, उस के बा'द मैं ने उस के अह्वाल की ह़क़ीक़त जानने वालों से इस के बारे में पूछ गछ की तो लोगों ने मुझे बताया : वोह सूद खाया करता था और एक **ताजिर** था, जब बुढ्ढा हुवा और उस के पास माल कम रह गया तो उस का ज़ालिम और ख़बीष नफ़्स अपनी बाक़ी ज़िन्दगी में उस जम्अ़ शुदा पूंजी से गुज़ारा करने पर राज़ी न हुवा और शैत़ान ने उस के दिल में **सूद** की मह़ब्बत को आरास्ता किया ताकि उस के माल में कमी न हो और येही वजह है कि वोह रमज़ान बल्कि शबे क़द्र में भी इस दर्दनाक अ़ज़ाब से दो चार है।[1]

गुनाह ख़ल्वत में हो या जल्वत में गुनाह है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! मा'लूम हुवा गुनाह ख़ल्वत में हो या जल्वत में (या'नी तन्हाई में या सब के सामने), गुनाह ही

1 .....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल-1/69 ता 70)

होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी नाफ़रमानी करने वाले बन्दों पर सख़्त ग़ज़ब फ़रमाता है। ग़ौर फ़रमाइये ! येह वोह लोग थे जो ज़ाहिरी तौ़र पर तो नेक थे मगर छुप कर गुनाह करते थे और एक हम हैं कि अ़लल ए'लान गुनाह करते फिरते हैं और ज़रा नहीं शर्माते, आह ! हमारा क्या बनेगा ?

आह ! ज़रा सोचिये तो सही ! अगर यूंही गुनाह करते करते क़ब्र में उतर गए और हम पर अ़ज़ाब मुसल्लत़ कर दिया गया तो हम क्या करेंगे ? अगर सांप बिच्छूओं ने कफ़न फाड़ कर हमारे जिस्म पर क़ब्ज़ा जमा लिया तो कहां जाएंगे ? क़ब्र की दीवारें मिलने से हमारी पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो गईं तो कैसी शदीद तक्लीफ़ होगी ? एक पथ्थर की चोट तो बरदाश्त होती नहीं अगर फ़िरिश्तों ने हथोड़े बरसाने शरूअ़ कर दिये तो इन नाज़ुक हड्डियों का क्या बनेगा ? गुनाहों के सबब रब عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में होने वाले इन अ़ज़ाबात को ज़रा तसव्वुर में तो लाइये...और फिर फ़ैसला कीजिये कि हमारा गुनाहों से बचना आसान है या इन अ़ज़ाबात को सहना..! यक़ीनन हम में से कोई भी इन अ़ज़ाबों की ताब नहीं रखता तो आइये अभी वक़्त है तौबा कर लीजिये ख़ुद को गुनाहों से बचाते हुवे रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और फ़रमां बरदारी में अय्यामे ज़ीस्त (ज़िन्दगी के अय्याम) बसर कीजिये कि इसी में कामयाबी है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने ह़जर हैतमी मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का एक फ़रमान कुछ यूं नक़्ल फ़रमाते हैं : ऐ गुनाहगार ! तू गुनाह के अन्जामे बद से क्यूं बे ख़ौफ़ है ? ह़ालांकि गुनाह की त़लब में रहना गुनाह करने से भी बड़ा गुनाह है, तेरा दाएं, बाएं जानिब के फ़िरिश्तों से ह़या न करना और गुनाह पर क़ाइम रहना भी बहुत बड़ा गुनाह है या'नी तौबा किये बिग़ैर तेरा गुनाह पर क़ाइम रहना इस से भी बड़ा गुनाह है, तेरा गुनाह कर लेने पर ख़ुश होना और क़हक़हा लगाना इस से भी बड़ा गुनाह है ह़ालांकि तू नहीं जानता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे साथ क्या सुलूक फ़रमाने वाला है ? और तेरा गुनाह में नाकामी पर ग़मगीन होना इस से भी बड़ा गुनाह है । गुनाह करते हुवे तेज़ हवा से दरवाज़े का पर्दा उठ जाए तो तू डर जाता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस नज़र से नहीं डरता जो वोह तुझ पर रखता है तेरा येह अ़मल इस से भी बड़ा गुनाह है ।[1]

बनी इस्राईल पर मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाबों का सबब

मरवी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से अ़र्ज़ की गई : क्या बनी इस्राईल ने अपना दीन छोड़ दिया था जिस की वजह से उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के दर्दनाक अ़ज़ाबों में मुब्तला किया गया मषलन उन की सूरतें बिगाड़ कर उन्हें बन्दर व ख़िन्ज़ीर बना दिया गया और अपने आप को क़त्ल करने का हुक्म दिया गया ? तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : नहीं ! बल्कि जब

1 الزواجر عن اقتراف الكبائر، مقدمة في تعريف الكبيرة، خاتمة في التحذير۔۔الخ، ۱/۲۷

उन्हें किसी चीज़ का हुक्म दिया जाता तो वोह उसे छोड़ देते और जब किसी काम से रोका जाता तो (अन्जाम की परवाह किये बिग़ैर) उसे कर गुज़रते यहां तक कि वोह अपने दीन से इस त़रह निकल गए जैसे आदमी अपनी क़मीस से निकल जाता है।[1]

दा'वते इस्लामी और गुनाहों के ख़िलाफ़ जंग

मा'लूम हुवा ! गुनाहों के सबब ईमान बरबाद हो सकता है और यक़ीनन एक मुसलमान के लिये ईमान के छिन जाने से बड़ी कोई बरबादी हो ही नहीं सकती, लिहाज़ा फ़ौरन गुनाहों से तौबा कर के कुरआनो सुन्नत के अह़कामात पर अ़मल को अपना मा'मूल बना लीजिये। अपने आप को और अपने दोस्त अह़बाब व दीगर रिश्तेदारों को गुनाहों से बचाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी त़हरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल को अपना लीजिये, क्यूंकि पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ज़ेरे सरपरस्ती दा'वते इस्लामी ने गुनाहों के ख़िलाफ़ जंग शुरूअ़ कर रखी है। दा'वते इस्लामी ज़िन्दगी के हर मोड़ पर आ़शिक़ाने रसूल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाफ़रमानी से बचने का दर्स दे रही है और येह बात हर मुसलमान तक पहुंचाने के लिये अपनी भरपूर कोशिशें कर रही है कि एक लम्हे का

1 الزواجر عن اقتراف الکبائر، مقدمۃ فی تعریف الکبیرۃ، خاتمۃ فی التحذیر۔۔۔الخ، ۱/۲۶

करोड़वां हिस्सा भी जहन्नम का अ़ज़ाब कोई बरदाश्त नहीं कर सकता, लिहाज़ा हर दम गुनाहों से बचने की कोशिश और जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िले की फ़िक्र करनी चाहिये।

गुनाहों का सबब बनने वाली चार सिफ़ात

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन्सान की अच्छी और बुरी ख़स्लतें अगर्चे बहुत हैं मगर हम यहां सिर्फ़ गुनाहों का तज़किरा करेंगे, लिहाज़ा गुनाहों के ए'तिबार से इन्सानी अवसाफ़ का मुतालआ करने से मा'लूम होता है कि चार **(4)** सिफ़ात (सिफ़ाते बहीमिय्या, सिफ़ाते सबइय्या, सिफ़ाते शैतानिय्या और सिफ़ाते रबूबिय्यत) गुनाहों की अस्ल और इन का सर चश्मा हैं। इन्ही से गुनाह पैदा हो कर आ'ज़ा का रुख़ करते हैं। बा'ज़ गुनाह दिल का रुख़ करते हैं जैसे कुफ़्र और बिदअ़त व निफ़ाक़ वग़ैरा और बा'ज़ आंख, कान, ज़बान, पेट, शर्मगाह, हाथ, पाउं में सरायत कर जाते हैं और बा'ज़ तो पूरे जिस्म पर ग़ालिब आ जाते हैं।[(1)]

गुनाहों की अक़्साम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के और बन्दों के हुक़ूक़ को सामने रखते हुवे जब मज़्कूरा बुरी सिफ़ात के ए'तिबार से गुनाहों का जाइज़ा लें तो येह बात सामने आती है कि

1 مختصر منهاج القاصدین، کتاب التوبة، فصل فی بیان اقسام الذنوب، ص ۲۵۶

इन सिफ़ात की वजह से पैदा होने वाले गुनाह बुन्यादी तौ़र पर दो त़रह़ के होते हैं जिन्हें हम गुनाहे सग़ीरा और गुनाहे कबीरा के नामों से जानते हैं। सग़ीरा गुनाह मुख़्तलिफ़ नेकी के काम करने मषलन नमाज़, रोज़ा और ह़ज वग़ैरा की अदाएगी से मुआ़फ़ हो जाते हैं और येह इ़बादात इन गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा बन जाती हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : पांचों नमाज़ें और जुमुआ़ अगले जुमुआ़ तक और माहे रमज़ान अगले माहे रमज़ान तक (होने वाले) गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए।[1]

कबीरा गुनाहों की दो सूरतें हैं : अगर इन का तअ़ल्लुक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ से हो तो सच्ची तौबा करने से मुआ़फ़ हो जाते हैं और अगर इन का तअ़ल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से हो तो ह़क़ की अदाएगी या साह़िबे ह़क़ के मुआ़फ़ किये बिग़ैर मुआ़फ़ नहीं होते। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : **नामए आ'माल तीन** हैं।

★ دِیۡوَانٌ لَا یَغۡفِرُہُ اللّٰہُ: اَلۡاِشۡرَاکُ بِاللّٰہِ۔ یَقُوۡلُ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ: اِنَّ اللّٰہَ لَا یَغۡفِرُ اَنۡ یُّشۡرَکَ بِہٖ

एक नामए अ़मल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नहीं बख़्शेगा या'नी वोह

1 مسلم، کتاب الطھارۃ، باب الصلوات الخمس.. الخ، ص ۱۴۴، حدیث: ۲۳۳

नामए अ़मल जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक ठहराना दर्ज होगा। जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اِنَّ اللّٰهَ لَا یَغْفِرُ اَنْ یُّشْرَكَ بِهٖ (پ۵، النسآء:۴۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़्र किया जाए।

★ وَدِیوَانٌ لَا یَتْرُكُهُ اللّٰهُ: ظُلْمُ الْعِبَادِ فِیمَا بَیْنَهُمْ حَتّٰی یَقْتَصَّ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ

और एक नामए अ़मल को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नहीं छोड़ेगा या'नी वोह नामए अ़मल जिस में बन्दों का एक दूसरे पर ज़ुल्म करना दर्ज होगा यहां तक कि वोह एक दूसरे से बदला ले लें।

★ وَدِیوَانٌ لَا یَعْبَأُ اللّٰهُ بِهٖ: ظُلْمُ الْعِبَادِ فِیمَا بَیْنَهُمْ وَبَیْنَ اللّٰهِ، فَذَاكَ اِلَی اللّٰهِ: اِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ، وَاِنْ شَاءَ تَجَاوَزَ عَنْهُ

और तीसरे नामए अ़मल की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कोई परवाह नहीं करेगा या'नी वोह नामए अ़मल जिस में बन्दों का हुक़ूक़ुल्लाह में ज़ियादती करना दर्ज होगा। इस के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी है चाहे तो अ़ज़ाब दे या मुआ़फ़ कर दे।[1]

गुनाहों की ता'दाद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों के सग़ीरा व कबीरा होने के ए'तिबार से इन की सह़ीह़ ता'दाद बयान करना बहुत मुश्किल है, अलबत्ता ! कबीरा गुनाहों की पहचान ह़ासिल करने के लिये

1 شعب الایمان، باب فی طاعة اولی الامر، فصل فی ذکر ما ورد من التشدید... الخ، ۶/ ۵۲، حدیث: ۷۴۷۳

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन उ़षमान ज़हबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की किताब "**अल कबाइर**" और हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने हज़र हैतमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा. **974** हि.) की किताब "**अज़्ज़वाजिर अ़निक़्तिराफ़िल कबाइर**" का मुत़ालआ़ मुफ़ीद है क्यूंकि इन दोनों किताबों में बहुत से कबीरा गुनाहों का तज़किरा किया गया है। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इब्ने हज़र हैतमी शाफ़ेई़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی अपनी किताब के मुक़द्दमे में कबीरा गुनाहों की मुख़्तलिफ़ ता'रीफ़ात ज़िक्र करने के बा'द आख़िर में हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं कि कबीरा गुनाह सतरह (**17**) हैं :

★ **चार** का तअ़ल्लुक़ दिल से है : (**1**) शिर्क (**2**) गुनाह पर इस्रार (**3**) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मायूसी और (**4**) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ रहना।

★ **चार** का ज़बान से : (**1**) ज़िना की तोहमत लगाना (**2**) झूटी गवाही देना और (**3**) जादू करना। जादू हर उस कलाम को कहते हैं जो इन्सान या उस के बदन के किसी हिस्से (की ह़ालत) को बदल दे (**4**) झूटी क़सम उठाना। इस से मुराद वोह क़सम है जिस के ज़रीए़ किसी का ह़क़ बात़िल किया जाए या किसी बात़िल को षाबित किया जाए।

★ **तीन** का पेट से : (**1**) यतीम का माल ज़ुलमन खाना (**2**) सूद खाना (**3**) हर नशा आवर चीज़ पीना।

★ **दो** का शर्मगाह से : (**1**) ज़िना और (**2**) लिवात़त।

★ **दो** का हाथों से : (**1**) क़त्ल करना और (**2**) चोरी करना

★ **एक** का पाउं से : वोह जिहाद से फ़िरार होना है।

★ और **एक** गुनाहे कबीरा का तअ़ल्लुक़ पूरे जिस्म से है : वोह वालिदैन की नाफ़रमानी करना है।[1]

नफ़्स येह क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म है
नातुवां के सर पर इतना बोझ भारी वाह वाह[2]

गुनाहों का अन्जाम

प्यारे इस्लामी भाइयो! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَيْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **क़ूतुल कुलूब** में फ़रमाते हैं : ज़ियादा तर (अपने नहीं बल्कि) दूसरों के गुनाह ही दोज़ख़ में दाख़िले का बाइ़ष होंगे जो (हुक़ूक़ुल इ़बाद तलफ़ करने के सबब) इन्सान पर डाल दिये जाएंगे। नीज़ बे शुमार अफ़राद (अपनी नेकियों के सबब नहीं बल्कि) दूसरों की नेकियां ह़ासिल कर के जन्नत में दाख़िल होंगे।[3] ज़ाहिर है दूसरों की नेकियां ह़ासिल करने वाले वोही होंगे जिन की दुन्या में दिल आज़ारियां और ह़क़ तल्फ़ियां हुई होंगी। यूं बरोज़े क़ियामत मज़्लूम और दुखयारे फ़ाइदे में रहेंगे।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **300** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **आंसूओं का दरया** सफ़ह़ा **48** पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने जौज़ी عَلَيْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कब तक (नेक) आ'माल में सुस्ती करोगे ? और कब

1 الزواجر عن اقتراف الكبائر، مقدمة فى تعريف الكبيرة، ١/ ٢٤
2 ह़दाइके़ बख़्शिश, स.13
3 قُوتُ القُلُوب، الفصل السابع والثلاثون فى شرح الكبائر . . . الخ، ٢/ ٢٥٣

तक झूटी ख़्वाहिशात की तक्मील की हिर्स रखोगे ? तुम मोहलत से धोका खाते हो और मौत के हमले को याद नहीं करते हो, जिसे तुम ने जना है (या'नी अवलाद) वोह मिट्टी के लिये है और जो कुछ ता'मीर किया है (या'नी मकान वग़ैरा) वोह वीरान होने के लिये है और जो कुछ तुम ने जम्अ़ किया है (या'नी मालो दौलत) वोह ख़त्म होने के लिये है और तुम्हारे अ़मल क़ियामत के दिन के लिये एक आ'माल नामे में महफ़ूज़ हैं ।

وَلَوْ اَنَّا اِذَا مُتْنَا تُرِكْنَا لَكَانَ الْمَوْتُ رَاحَةَ كُلِّ حَيّ

وَلٰكِنَّا اِذَا مُتْنَا بُعِثْنَا وَنُسْئَلُ بَعْدَهَا عَنْ كُلِّ شَيْئٍ

तर्जमा : (1) अगर हम मरने के बा'द (यूंही) छोड़ दिये जाएं तो फिर मौत हर ज़िन्दा के लिये राहत बन जाए। (2) मगर जब हम मरेंगे तो दोबारा उठाए जाएंगे और इस के बा'द हर शै के बारे में हम से पूछा जाएगा।[1]

गुनाहों के दस नुक़्सान

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से हरगिज़ धोके में न पड़ना :

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا (پ۸، الانعام: ۱۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं और जो बुराई लाए तो उसे बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर।*

1 بحر الدموع، الفصل الثانی عواقب المعصیة، ص ۳۰

क्यूंकि गुनाह अगर्चे एक ही हो अपने साथ दस बुरी ख़स्लतें ले कर आता है : (1) जब बन्दा गुनाह करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ग़ज़ब दिलाता है और वोह इसे पूरा करने पर क़ुदरत रखता है। (2) वोह (या'नी गुनाह करने वाला) इब्लीसे मलऊ़न को ख़ुश करता है। (3) जन्नत से दूर हो जाता है। (4) जहन्नम के क़रीब आ जाता है। (5) वोह अपनी सब से प्यारी चीज़ या'नी अपनी जान को तक्लीफ़ देता है। (6) वोह अपने बातिन को नापाक कर बैठता है ह़ालांकि वोह पाक होता है। (7) आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों या'नी किरामन कातिबीन को ईज़ा देता है। (8) वोह नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रौज़ए मुबारका में रन्जीदा कर देता है। (9) ज़मीनो आस्मान और तमाम मख़्लूक़ को अपनी नाफ़रमानी पर गवाह बना लेता है। (10) वोह तमाम इन्सानों से ख़यानत और रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करता है।[1]

बुरे ख़ातिमे का सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي और ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान राई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي दोनों एक जगह इकठ्ठे हुवे। सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي सारी रात रोते रहे। सय्यिदुना शैबान राई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : मुझे बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ रुला रहा है। आह ! मैं ने एक शैख़ से 40 साल इ़ल्म ह़ासिल किया। उस ने 60 साल तक मस्जिदुल ह़राम

1 بحر الدموع، الفصل الثانی عواقب المعصیة، ص ۳۰

में इबादत की मगर उस का **ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा** । सय्यिदुना शैबान राई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने कहा : ऐ सुफ़्यान ! **वोह उस के गुनाहों** की शामत थी आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी हरगिज़ मत करना ।[1]

गुनाहों की ख़ौफ़नाक शक्लें

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : अगर तुम नूरे बसीरत से अपने बात़िन को देखो तो वोह त़रह़ त़रह़ के दरिन्दों के घेरे में है, मषलन, ग़ुस्सा, शहवत, कीना, ह़सद, तकब्बुर, ख़ुद पसन्दी और रियाकारी वग़ैरा । अगर तुम (गुनाहों के नज़र न आने वाले) इन दरिन्दों से लम्ह़े भर के लिये भी ग़ाफ़िल हो (कर गुनाह करते हो) तो येह दरिन्दे तुम्हें काटते और नोचते हैं अगर्चे फ़िल ह़ाल (तुम्हें इस की तक़्लीफ़ मह़सूस नहीं होती और) येह तुम्हें नज़र (भी) नहीं आ रहे मगर मरने के बा'द क़ब्र में पर्दा उठ जाएगा और तुम इन दरिन्दों को देख लोगे । हां हां ! तुम अपनी आंखों से देखोगे कि गुनाहों ने बिच्छूओं और सांपों वग़ैरा की शक्लों में क़ब्र में तुम्हें घेर रखा है । यक़ीन मानो ! येह बुरी ख़स्लतें दर ह़क़ीक़त ख़ौफ़नाक दरिन्दे ही हैं जो इस वक़्त भी तुम्हारे पास मौजूद हैं लेकिन इन की भयानक शक्लें तुम्हें क़ब्र में नज़र आएंगी । इन दरिन्दों को अपनी मौत से पहले ही मार डालो या'नी **गुनाह छोड़ दो,** अगर नहीं छोड़ते तो अच्छी त़रह़ जान लो

1 سبع سنابل، ص ۳۴

कि येह गुनाहों के दरिन्दे इस वक़्त भी तुम्हारे दिल को काट और नोच रहे हैं अगर्चे तुम्हें फ़िलहाल तक़्लीफ़ महसूस नहीं होती ।[1]

गुनाहों के दुन्यावी नुक़्सान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों से आख़िरत का नुक़्सान और अ़ज़ाबे जहन्नम की सज़ाओं और क़ब्र में क़िस्म क़िस्म के अ़ज़ाबों में मुब्तला होना तो हर शख़्स जानता है मगर याद रखिये ! गुनाहों की नुहूसत से आदमी को दुन्या में भी त़रह़ त़रह़ के नुक़्सान पहुंचते रहते हैं जिन में से चन्द येह हैं : (1) रोज़ी कम हो जाना (2) बलाओं का हुजूम (3) उ़म्र घट जाना (4) दिल में और बा'ज़ मरतबा तमाम बदन में अचानक कमज़ोरी पैदा हो कर सिह़्ह़त ख़राब हो जाना (5) इ़बादतों से मह़रूम हो जाना (6) अ़क़्ल में फ़ुतूर पैदा हो जाना (7) लोगों की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार हो जाना (8) खेतों और बाग़ों की पैदावार में कमी हो जाना (9) ने'मतों का छिन जाना (10) हर वक़्त दिल का परेशान रहना (11) अचानक ला इ़लाज बीमारियों में मुब्तला हो जाना (12) **अल्लाह** तआ़ला, उस के फ़िरिश्तों नबियों और नेक बन्दों की ला'नतों में गिरिफ़्तार हो जाना (13) चेहरे से ईमान का नूर निकल जाने से चेहरे का बे रोनक़ हो जाना (14) शर्म व ग़ैरत का जाता रहना । (15) हर त़रफ़ से ज़िल्लतों, रुस्वाइयों और नाकामियों का हुजूम हो जाना (16) मरते वक़्त मुंह से कलिमा न निकलना वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों की नुहूसत से बड़े बड़े दुन्यावी नुक़्सान हुवा करते हैं ।[2]

---

1 احیاءُالعلوم، کتاب الخوف والرجاء، بیان احوال الصحابة والتابعین.. الخ، ۴/ ۲۳۳ ملخّصاً

2 जन्नती ज़ेवर, स.143

हक़ीक़त में कामयाब कौन ?

अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कषीर मुसलमान झूट, ग़ीबत, तोहमत, ख़ियानत, ज़िना, शराब, जूआ, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे वग़ैरा सुनने के गुनाह बे बाकाना किये जा रहे हैं, अकषर मुसलमान औ़रतों ने मर्दों के शाना ब शाना चलने की नापाक धुन में ह़या की चादर उतार फेंकी है और अब दीदा ज़ैब साड़ियों, नीम उ़रयां ग़रारों और मर्दाना वज़्अ़ के लिबासों वग़ैरा के साथ शादी हॉलों, होटलों, तफ़रीह़ गाहों और सीनेमा घरों में अपनी आख़िरत बरबाद करने में मश्ग़ूल हैं। ख़ुदा की क़सम ! मौजूदा रविश में न तरक़्क़ी है न कामयाबी। तरक़्क़ी और कामयाबी सिर्फ़ सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करते हुवे इस मुख़्तसर तरीन ज़िन्दगी को सुन्नतों के मुत़ाबिक़ गुज़ार कर ईमान सलामत लिये क़ब्र में जाने और जहन्नम के हौलनाक अ़ज़ाब से बच कर जन्नतुल फ़िरदौस पाने में है। चुनान्चे, पारह **4** सूरए आले इमरान की आयत नम्बर **185** में इरशादे ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ है :

فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ (پ۴، اٰل عمران:۱۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा।*

गुनाहों का इलाज

गुनाहों के छे इलाज

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! मुझ से बहुत गुनाह सरज़द होते हैं, बराए करम ! गुनाहों का इ़लाज तजवीज़ फ़रमा दीजिये। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उसे येह छे नसीह़तें फ़रमाईं :

पहली नसीह़त येह फ़रमाई : जब गुनाह करने का पक्का इरादा हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रिज़्क़ खाना छोड़ दो। उस शख़्स ने ह़ैरत से अ़र्ज़ की : ह़ज़रत ! आप कैसी नसीह़त फ़रमा रहे हैं ! येह कैसे हो सकता है ? जब कि रज़्ज़ाक़ عَزَّوَجَلَّ वोही है, मैं उस की रोज़ी छोड़ कर भला किस की रोज़ी खाऊंगा ! फ़रमाया : देखो ! कितनी बुरी बात है कि जिस परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रोज़ी खाओ उसी की नाफ़रमानी भी करो !

फिर **दूसरी नसीह़त** फ़रमाई : जब भी गुनाह का इरादा हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क से बाहर निकल जाओ। अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह भी कैसे हो सकता है ! मशरिक़, मग़रिब, शिमाल, जुनुब, दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे अल ग़रज़ जिधर जाऊं उधर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का मुल्क पाऊं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क से बाहर किस त़रह़ जाऊं ! फ़रमाया : देखो ! कितनी बुरी बात है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क में भी रहो और फिर उस की नाफ़रमानी भी करो।

तीसरी नसीहत येह इरशाद फ़रमाई : जब पुख़्ता इरादा हो जाए कि बस अब गुनाह कर ही डालना है तो अपने आप को इतना छुपा लो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख न सके। अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह क्यूंकर मुमकिन है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे देख न सके, वोह तो दिलों के अह़वाल से भी बा ख़बर है। फ़रमाया : देखो ! कितनी बुरी बात है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को समीओ़ बसीर (या'नी सुनने वाला और देखने वाला) भी तस्लीम करते हो और येह भी यक़ीन के साथ कह रहे हो कि हर लम्ह़े मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख रहा है मगर फिर भी गुनाह किये जा रहे हो ?

चौथी नसीहत येह इरशाद फ़रमाई : जब मलकुल मौत सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये तशरीफ़ लाएं तो उन से कह देना : थोड़ी सी मोहलत दे दीजिये ताकि मैं तौबा कर लूं। अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मेरी क्या अवक़ात और मेरी सुने कौन ? मौत का वक़्त मुक़र्रर है और मुझे एक लम्ह़े भी मोहलत नहीं मिल सकेगी फ़ौरन मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाएगी। फ़रमाया : जब तुम येह जानते हो कि मैं बे इख़्तियार हूं और तौबा की मोहलत ह़ासिल नहीं कर सकता तो फ़िलह़ाल मिले हुवे लम्ह़ात को ग़नीमत जानते हुवे मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आवरी से पहले पहले तौबा क्यूं नहीं कर लेते ?

फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने **पांचवीं नसीहत** येह फ़रमाई : जब तुम्हारी मौत वाक़ेअ़ हो जाए और क़ब्र में मुन्कर नकीर तशरीफ़ ले आए तो उन को क़ब्र से हटा देना। अ़र्ज़ की : सरकार ! येह क्या फ़रमा रहे हैं ! मैं उन्हें कैसे हटा सकूंगा ! मुझ में इतनी ताक़त कहां ! आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम नकीरैन (نَ-کی-رَین) को हटा नहीं सकते तो उन के सुवालात के जवाबात की तय्यारी अभी से क्यूं नहीं कर लेते ?

छटी और आख़िरी नसीहत करते हुवे फ़रमाया : अगर क़ियामत के दिन तुम्हें जहन्नम का हुक्म सुनाया जाए तो कह देना : ''नहीं जाता।'' अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! वहां तो गुनाहगारों को घसीट कर दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। फ़रमाया : जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रोज़ी खाने से भी बाज़ नहीं आ सकते, उस के मुल्क से बाहर भी नहीं निकल सकते, उस से नज़र भी नहीं बचा सकते, मुन्कर नकीर को भी नहीं हटा सकते और अगर जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाए तो उसे भी नहीं टाल सकते तो फिर गुनाह करना ही क्यूं नहीं छोड़ देते ! उस शख़्स पर सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के तजवीज़ कर्दा गुनाहों के इ़लाज के इन छे नसीहत आमोज़ मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं ने बहुत अषर किया, ज़ारो क़िता़र रोते हुवे उस ने अपने तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर ली और मरते दम तक तौबा पर क़ाइम भी रहा।[1]

1 नेकी की दा'वत, स.307 ब ह़वाला तज़किरतुल औलिया, स.100 मुलख़्ख़सन

मुबल्लिग़ीन के लिये मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن मुसलमानों के गुनाहों के सबब होने वाले हौलनाक अ़ज़ाब के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौर कर के उन पर रह़्म करते, उन के लिये ग़मगीन होते और उन की इस्लाह़ के लिये कुढ़ते थे। हमें भी मुसलमानों की हमदर्दी और ग़मगुसारी करनी चाहिये, उन की इस्लाह़ के लिये हर दम कोशां रहना चाहिये और इस में ह़ौसला बड़ा रखना और ह़िक्मते अ़मली से काम लेना चाहिये। इस ज़िम्न में हमें डॉक्टर के त़रीक़े कार से समझने की कोशिश करनी चाहिये जैसा कि कड़वी दवा और इन्जिकशन वग़ैरा के सबब मरीज़ अगर डॉक्टर से कतराता भी है तब भी डॉक्टर उस से नफ़रत नहीं बल्कि प्यार ही से पेश आता है। इसी त़रह़ गुनाहों का मरीज़ चाहे हमारा मज़ाक़ उड़ाए, ख़्वाह हम पर फब्तियां कसे हमें भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिये, अगर हम पैहम सअ़ूय करते रहेंगे और मैदाने अ़मल से भागने वालों को दा'वते इस्लामी के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र के आ़दी बनाने में कामयाब हो जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुनाहों के मरीज़ ज़रूर शिफ़ायाब होते चले जाएंगे। मगर इस मदनी मक़्सद के पेशे नज़र कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" हमेंशा याद रखिये कि दूसरों की इस्लाह़ में मगन हो कर अपनी इस्लाह़ से कभी ग़ाफ़िल न हों। चुनान्चे, जब ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ैषम

رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की जाती कि आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लोगों को वा'ज़ो नसीह़त क्यूं नहीं करते ? तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जवाबन इरशाद फ़रमाते : अभी तो मुझे ख़ुद अपनी इस्लाह़ की ज़रूरत है फिर मैं लोगों को कैसे नसीह़त करूं ? उन्हें कैसे उन के गुनाहों पर मलामत करूं ? बेशक लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूसरों के गुनाहों के बारे में तो डरते हैं लेकिन ख़ुद अपने गुनाहों के बारे में उस से बे ख़ौफ़ हैं।[(1)]

ख़ौफ़े गुनाह हो तो ऐसा !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आह ! जहन्नम का ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब !! गुनाहों से कनारा कशी निहायत ही ज़रूरी है वरना सख़्त सख़्त सख़्त आज़माइश का सामना हो सकता है। हमें अपने गुनाहों पर नदामत होनी और इस की वजह से दहशत खानी चाहिये। काश ! नसीब हो जाए ! इस ज़िम्न में एक ह़िकायत पढ़िये और तड़पिये : एक मरतबा आ़बिदीन (इ़बादत गुज़ारों) का एक क़ाफ़िला जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी मौजूद थे सफ़र पर चला, कषरते इ़बादत के सबब उन आ़बिदीन की आंखें अन्दर की त़रफ़ हो गई थीं, पाउं सूज गए थे और ख़रबूज़े के छिलकों की त़रह़ कमज़ोर हो गए थे, मह़सूस होता था गोया अभी अभी क़ब्रों से निकल कर आए हैं, राह में एक आ़बिद बेहोश हो गए और सख़्त

---

1 عیون الحکایات، الحکایۃ الخامسۃ عشرۃ مع الزھاد الاوائل، ص۳۱ملخّصاً

सर्दी के बा वुजूद उन के सर से ब सबबे दहशत पसीना टपकने लगा, होश आने के बा'द लोगों के इस्तिफ़सार पर बताया : जब मैं इस जगह से गुज़रा तो मुझे याद आया कि फुलां रोज़ इस मक़ाम पर मैं ने गुनाह किया था, इस ख़याल से मेरे दिल में हिसाबे आख़िरत की दहशत त़ारी हो गई और मैं बेहोश हो गया।[1]

नफ़्स येह क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म है
नातुवां के सर पर इतना बोझ भारी वाह वाह[2]

नमाज़ गुनाहों से रोकती है

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ (پ۲۱، العنکبوت: ۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे ह़याई और बुरी बात से।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : जो शख़्स नमाज़ का पाबन्द होता है और इस को अच्छी त़रह़ अदा करता है तो नतीजा येह होता है कि एक न एक दिन वोह उन बुराइयों को तर्क कर देता है जिन में मुब्तला था। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि एक अन्सारी जवान सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ा करता था

1 احیاء العلوم، ۴/ ۲۲۹ ملخّصًا

2 ह़दाइक़े बख़्शिश, स.134

और बहुत से कबीरा गुनाहों का इर्तिकाब करता था । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उस की शिकायत की गई, फ़रमाया : उस की नमाज़ किसी रोज़ उस को इन बातों से रोक देगी । चुनान्चे, बहुत ही क़रीब ज़माने में उस ने तौबा की और उस का हाल बेहतर हो गया । हज़रते हसन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि **जिस की "नमाज़" उस को बे हयाई और ममनूआत से न रोके वोह नमाज़ ही नहीं ।**[1]

दाढ़ी भी गुनाहों से रोकती है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दाढ़ी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इतनी प्यारी सुन्नत है कि इस की बरकत से गुनाहों से बचा जा सकता है । जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : दाढ़ी मर्द को बहुत से गुनाहों से रोकती है क्यूंकि दाढ़ी से मर्द पर बुज़ुर्गी आ जाती है उस को बुरे काम करते हुवे येह ग़ैरत होती है कि अगर कोई देख लेगा तो कहेगा कि ऐसी दाढ़ी और तेरे ऐसे काम ? दाढ़ी की भी तुझ को लाज न आई ? इस ख़याल से वोह बहुत सी छिछोरी बातें और खुल्लम खुल्ला बुरे काम से बच जाता है येह आज़माइश है कि नमाज़ और दाढ़ी ब بفضله تعالى बुराइयों से रोकती है ।[2]

1 خزائن العرفان، پ۲۱، العنکبوت، تحت الآیۃ: ۴۵، حاشیہ نمبر ۱۱۰

2 इस्लामी ज़िन्दगी, स.92

इमामा भी गुनाहों से महफ़ूज़ रहने का ज़रीआ़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दाढ़ी की त़रह़ इमामा शरीफ़ भी गुनाहों से बचने और शैत़ान को ख़ुद से दूर भगाने का एक यक़ीनी ज़रीआ़ है। चुनान्चे,

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में तारीख़े मदीना दिमश्क़ के ह़वाले से ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان से मरवी एक रिवायत नक़्ल फ़रमाई है जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मैं (ह़ज़रते सय्यिदुना) सालिम बिन **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो इन्हों ने ह़दीष इमला कराई फिर मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : ऐ अबू अय्यूब ! क्या तुझे ऐसी ह़दीष की ख़बर न दूं जो तुझे पसन्द हो कि मेरी त़रफ़ से रिवायत करे और इसे बयान करे ? मैं ने अ़र्ज़ किया : क्यूं नहीं। तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) सालिम बिन **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم फ़रमाते हैं : मैं अपने वालिदे माजिद (ह़ज़रते सय्यिदुना) **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हुवा और वोह इमामा बांध रहे थे, जब बांध चुके तो मेरी त़रफ़ इल्तिफ़ात कर के फ़रमाया : तुम इमामे को दोस्त रखते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! फ़रमाया : **इसे दोस्त रखो, इ़ज़्ज़त पाओगे और जब शैत़ान तुम्हें देखेगा तुम से पीठ फेर लेगा।**[1]

1 फ़तावा रज़विय्या, 6 / 214 , तारीख़े मदीना दिमश्क़, 37 / 354

गुनाहों से नजात के चन्द मुख़्तलिफ़ त़रीक़े

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, हम ने पांच चीज़ों को पांच में पाया : (1) **गुनाहों के इलाज को नमाज़े चाश्त में** (2) क़ब्रों की रोशनी को तहज्जुद में (3) मुन्कर नकीर के जवाबात को तिलावते कुरआन में (4) पुल सिरात़ पर से सलामत गुज़रने को रोज़ा और सदक़ा व ख़ैरात में (5) ह़श्र में सायए अ़र्श पाने को गोशा नशीनी में।[1]

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर छे दिन शव्वाल में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।[2]

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सुल्त़ाने ज़ीशान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मो'तकिफ़ के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : هُوَيَعْكِفُ الذُّنُوْبَ يُجْرٰى لَهٗ مِنَ الْحَسَنَاتِ كَعَامِلِ الْحَسَنَاتِ كُلِّهَا या'नी ए'तिकाफ़ करने वाला गुनाहों से बचा रहता है और उस के लिये तमाम नेकियां लिखी जाती हैं जैसे उन के करने वाले के लिये होती हैं।[3]

1 ملخّصاً من شرح الصّدور، باب فتنة القبر... الخ، فصل فيه فوائد، ص۱۴۷

2 مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فیمن صام رمضان... الخ، ۳/ ۴۲۵، حدیث: ۵۱۰۲

3 ابن ماجه، کتاب الصیام، باب فی ثواب الاعتکاف، ۲/ ۳۶۵، حدیث: ۱۷۸۱

(4) ह़या भी गुनाहों से बचने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है। चुनान्चे, किसी बुज़ुर्ग ने अपने बेटे को नसीह़त फ़रमाई (जिस का ख़ुलासा येह है कि) जब गुनाह करते हुवे तुझे आस्मानो ज़मीन में से किसी से (शर्मो ह़या) न आए तो **अपने आप को चोपायों में शुमार कर।**[1]

(5) गुनाहों से बचने की आ़दत बनाने के लिये गुनाहों से बचने के फ़ज़ाइल, इन के नुक़्सानात और उख़रवी सज़ाओं का मुत़ालआ़ करते रहना चाहिये।[2] नीज़ मुख़्तलिफ़ तकालीफ़ और अज़िय्यत देह अश्या को देख कर इ़ब्रत भी ह़ासिल करनी चाहिये कि मैं ने जो फ़ुलां गुनाह किया है अगर उस की पादाश में मुझे दुन्या ही में इस त़रह़ की तक्लीफ़ (जैसे आग में जलने, सांप बिच्छू वग़ैरा के डसने) में मुब्तला कर दिये गया जो क़ब्र व जहन्नम के अ़ज़ाब की तक्लीफ़ से कहीं ज़ियादा हल्की है जिसे मैं बरदाश्त नहीं कर सकता तो दोज़ख़ का दर्दनाक अ़ज़ाब क्यूं कर सह सकूंगा ? आह ! आह ! आह !

---

1 .....बा ह़या नौजवान, स. 58

2 .....इस के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मक्तबतुल मदीना ने एक किताब **''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल''** दो जिल्दों में शाएअ़ की है जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर हैतमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की किताब **''अज़्ज़वाजिर अ़निक़्तिराफ़िल कबाइर''** का उर्दू तर्जमा है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस किताब का मुत़ालआ़ गुनाहों की पहचान ह़ासिल करने और इन से बचने में सूदमन्द षाबित होगा।

गुनाहों की दवा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मौत को गले लगाने से पहले पहले गुनाहों की बीमारी का इलाज कर लीजिये, अगर गुनाह करते करते बिग़ैर तौबा मर गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा तो यक़ीन जानिये कहीं के न रहेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की अदाएं भी ख़ूब हुवा करती हैं, वोह नेकियां करने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते और गुनाहों की दवा तलाश करने में लगे रहते हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि मैं एक मरतबा किसी इबादत गुज़ार नौजवान के साथ बसरा की गलियों बाज़ारों में घूम रहा था कि हम एक त़बीब के पास से गुज़रे जो कुरसी पर बैठा था, उस के सामने बहुत से मर्द व औ़रत और बच्चे हाथों में पानी से भरी शीशियां लिये अपनी बीमारी के इलाज के त़लबगार थे। मेरे साथ जो इबादत गुज़ार नौजवान था उस ने कहा : ऐ त़बीब ! क्या आप के पास कोई ऐसी दवा भी है जो गुनाहों को धो डाले और अमराज़े क़ल्ब से शिफ़ा दे ? वोह बोला : "है।" नौजवान ने कहा : मुझे इनायत फ़रमा दीजिये। उस ने जवाब दिया : गुनाहों की दवा का नुस्ख़ा दस चीज़ों पर मुश्तमिल है : (1) फ़क़्र और इन्किसारी के दरख़्त की जड़ें लो। फिर (2) उस में तौबा का हलीला (या'नी हड़ नामी देसी दवा) मिला लो। फिर

(3) उसे रिज़ाए इलाही की खरल (या'नी दवा कूटने की पथ्थर की कूंडी) में डालो और (4) क़नाअ़त के दस्ते से ख़ूब अच्छी त़रह़ पीस लो। फिर (5) उसे तक़्वा व परहेज़गारी की हांडी में डाल दो और (6) साथ ही उस में ह़या का पानी भी मिला लो। फिर (7) उसे मह़ब्बते इलाही की आग से जोश दो (8) इस के बा'द उसे शुक्र के प्याले में डाल लो और (9) उम्मीद व रजा के पंखे से हवा दो और फिर (10) ह़म्दो षना के चमचे से पी जाओ। अगर तुम ने येह सब कुछ कर लिया तो येह नुस्ख़ा तुम्हें दुन्या व आख़िरत की हर बीमारी व मुसीबत में नफ़्अ़ पहुंचाएगा।[1]

गुनाह मिटाने का नुस्ख़ा

जब भी गुनाह सरज़द हो जाए तो कोई नेकी कर लेनी चाहिये मषलन कलिमए त़य्यिबा या दुरूद शरीफ़ वग़ैरा पढ़ लीजिये। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने बारगाहे नबवी में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे वसिय्यत फ़रमाइये। सुल्त़ाने दो जहान, मदीने के सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुझ से कोई बुरा अ़मल सरज़द हो जाए तो इस के बा'द कोई नेक काम कर लेना, येह नेकी उस बुराई को मिटा देगी। फ़रमाते हैं कि मैं ने

1 المنبّهات، ص۱۱۰

अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ कहना नेकियों में से है? फ़रमाया : येह तो अफ़्ज़ल तरीन नेकी है।[1]

गुनाहों से बचने का एक और नुस्ख़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप अपनी इस्लाह चाहते हैं तो जब गुनाह करने को जी चाहे मौत के तसव्वुर में गुम हो जाने की आदत डाल लीजिये या'नी इस तसव्वुर में खो जाइये कि यक़ीनी मौत आज भी आ सकती है और मरने के बा'द मुझे घुप अन्धेरी और मुख़्तसर सी क़ब्र में उतार कर बन्द कर दिया जाएगा, मैं अगर्चे बज़ाहिर हिल भी नहीं सकूंगा मगर सब कुछ समझ में आ रहा होगा ! हाए उस वक़्त मुझ पर क्या गुज़र रही होगी ! मेरे बच्चों और जिगरी दोस्तों को येह मा'लूम होने के बा वुजूद कि मुझे सब कुछ नज़र आ रहा है फिर भी अकेला छोड़ कर सारे ही मुझे पीठ दे कर चल पड़ेंगे, हाए ! हाए ! मेरी नाफ़रमानियां ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया तो मेरा क्या बनेगा ! हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى शरहुस्सुदूर में नक़्ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझे येह बात पहुंची है कि सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मुर्दे के साथ आने वाले लौट कर चलते हैं तो मुर्दा बैठ कर उन के क़दमों की आवाज़ सुनता है और क़ब्र से पहले कोई उस के साथ हम कलाम नहीं होता, क़ब्र कहती है :

1 مسند احمد، ۸/ ۱۱۳، حدیث: ۲۱۵۴۳

ऐ इब्ने आदम ! क्या तू ने मेरे हालात न सुने थे ? क्या मेरी तंगी, बदबू, हौलनाकी और कीड़ों से तुझे नहीं डराया गया था ? अगर ऐसा था तो फिर तू ने क्या तय्यारी की ?[1]

कब गुनाहों से कनारा मैं करूंगा या रब !
नेक कब ऐ मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब !
कब गुनाहों के मरज़ से मैं शिफ़ा पाऊंगा
कब मैं बीमार मदीने का बनूंगा या रब ![2]

गुनाहों के ग्यारह इलाज

(1) **یَاعَفُوُّ** : कषरत के साथ पढ़ते रहने से दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हो जाती है ।

(2) **یَامُمِیْتُ** : शहवत बहुत तंग करती हो तो रात को पढ़ते पढ़ते सोया करें ।

(3) **یَاحَمِیْدُ** : वस्वसों और बुरी आदतों से नजात पाने के लिये रात के वक़्त अन्धेरे में बिल्कुल तन्हा बैठ कर **93** बार पढ़ें (कम अज़ कम **45** दिन तक) ।

(4) **یَامُحْصِی** : सोते वक़्त सीने पर हाथ रख कर सात बार पढ़ लिया करें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इबादत में दिल लगेगा ।

(5) **یَابَاعِثُ** : इबादत में दिल लगने के लिये सीने पर हाथ रख कर सोते वक़्त सो बार पढ़िये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों से नफ़रत हो जाएगी)

1 شرح الصدور، باب مخاطبة القبر للميت، ص ۱۱۴

2 वसाइले बख़्शिश, स.**90**

(6) **یَامُقْسِطُ :** नमाज़ के बा'द सो बार पढ़ने से वस्वसों और गन्दा ज़ेह्नी से नजात मिलने के साथ साथ रंजो ग़म ख़त्म हो कर मसर्रत व शादमानी नसीब होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(7) **یَا قَهَّارُ :** चलते फिरते विर्द करते रहने से दुन्या की महब्बत दूर होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत पैदा होती है।

(8) **اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ :** शैतान से महफ़ूज़ रहने के लिये रोज़ाना दस बार पढ़िये।

(9) **یَامَتِیْنُ :** अवलाद अगर फ़िस्क़ो फ़ुजूर में मुब्तला हो गई हो तो दस बार रोज़ाना पढ़ कर उन पर दम कर दिया करें।

(10) **یَامُمِیْتُ :** बिला हिसाब जन्नत में दाख़िले के लिये हर नमाज़ के बा'द सीने पर हाथ रख कर सात बार पढ़ कर सीने पर दम करें। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बुरी आदतें भी छूटेंगी और इबादत में दिल लगेगा।

(11) **یَابَاطِنُ :** हर नमाज़ के बा'द सो बार पढ़िये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वस्वसों और गन्दे ख़यालात से छुटकारा हासिल होगा।[1]

---

1 .....हर अमल के अव्वलो आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़िये। विर्द शुरूअ करने से क़ब्ल किसी सुन्नी आलिम या क़ारी साहिब को सुना कर दुरुस्त मख़रज के साथ पढ़िये, नमाज़े पंजगाना की बा जमाअत पाबन्दी लाज़िम है।

मदनी मश्वरा : परेशान हाल इस्लामी भाई को चाहिये कि दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के वहां दुआ मांगे। अगर ख़ुद मजबूर है मषलन इस्लामी बहन है तो किसी और को सफ़र पर भिजवाए।

चार गुनाहों की निशान देही

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** तक़रीबन हर महाज़ पर हर क़िस्म के गुनाहों की रोकथाम के लिये नबर्द आज़मा है मगर यहां सिर्फ़ चार ऐसे गुनाहों की निशान देही और हलाकत ख़ैज़ी बयान की जाती है जो मुआ़शरे में तेज़ी से सरायत कर के हमारी उ़ख़रवी व दुन्यावी ज़िन्दगी की बरबादी का सबब बन रहे हैं :

(1) ह़सद (2) चुग़ली (3) शराब नोशी (4) बे ह़याई

(1) ह़सद की नुहूसत

ह़सद एक ऐसा ख़त़रनाक बात़िनी मरज़ है कि दुन्या का सब से पहला क़त्ल इसी "**ह़सद**" की बिना पर हुवा, रूए ज़मीन पर सब से पहला क़ातिल क़ाबील और सब से पहला मक़्तूल हाबील है। "**क़ाबील व हाबील**" येह दोनों ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام के फ़रज़न्द हैं। इन दोनों का वाक़िआ़ येह है कि ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हर ह़म्ल मैं एक लड़का और एक लड़की पैदा होते थे और एक ह़म्ल के लड़के का दूसरे ह़म्ल की लड़की से निकाह़ किया जाता था। इस दस्तूर के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने क़ाबील का निकाह़ "**लीयूज़ा**" से (जो हाबील के साथ पैदा हुई थी) करना चाहा मगर क़ाबील इस पर राज़ी न हुवा क्यूंकि "**इक़लीमा**" ज़ियादा ख़ूब सूरत थी। इस लिये वोह इस का त़लबगार हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام

ने उस को समझाया कि इक़लीमा तेरे साथ पैदा हुई है, इस लिये वोह तेरी बहन है, उस के साथ तेरा निकाह़ नहीं हो सकता। मगर क़ाबील अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। बिल आख़िर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने येह हुक्म दिया कि तुम दोनों अपनी अपनी कुरबानियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरबार में पेश करो। जिस की कुरबानी मक़्बूल होगी वोही **इक़लीमा** का ह़क़दार होगा।

उस ज़माने में कुरबानी की मक़्बूलिय्यत की येह निशानी थी कि आस्मान से एक आग उतर कर उस को खा लिया करती थी। चुनान्चे, क़ाबील ने गेहूं की कुछ बालें और हाबील ने एक बकरी कुरबानी के लिये पेश की। आस्मानी आग ने हाबील की कुरबानी को खा लिया और क़ाबील के गेहूं को छोड़ दिया। इस बात पर क़ाबील के दिल में बुग़्ज़ो ह़सद पैदा हो गया और उस ने हाबील को क़त्ल कर देने की ठान ली और हाबील से कह दिया कि मैं तुझ को क़त्ल कर दूंगा। हाबील ने कहा कि कुरबानी क़बूल करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का काम है और वोह मुत्तक़ी बन्दों ही की कुरबानी क़बूल करता है। अगर तू मुत्तक़ी होता तो ज़रूर तेरी कुरबानी क़बूल होती। साथ ही हाबील ने येह भी कह दिया कि अगर तू मेरे क़त्ल के लिये हाथ बढ़ाएगा तो मैं तुझ पर अपना हाथ नहीं उठाऊंगा क्यूंकि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं। मैं येह चाहता हूं कि मेरा और तेरा गुनाह दोनों तेरे ही पल्ले पड़े और तू दोज़ख़ी हो जाए क्यूंकि बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है। आख़िर क़ाबील ने अपने भाई हाबील

को क़त्ल कर दिया। ब वक़्ते क़त्ल हाबील की उ़म्र बीस बरस की थी और क़त्ल का येह ह़ादिषा मक्कए मुकर्रमा में जबले षौर के पास या जबले ह़िरा की घाटी में हुवा और बा'ज़ का क़ौल है कि बसरा में जिस जगह मस्जिदे आ'ज़म बनी हुई है मंगल के दिन येह सानेह़ा हुवा।[1] (واللّٰہ تعالٰی اعلم)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ाबील के ह़सद में गिरिफ़्तार हो कर अपने भाई को क़त्ल करने से मा'लूम हुवा **ह़सद** कितनी बुरी और ख़त़रनाक क़ल्बी बिमारी है। इसी लिये पारह **30** सूरतुल फ़लक़ की आख़िरी आयते मुबारका में ह़ासिद के ह़सद से पनाह मांगने की तल्क़ीन की गई है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥
(پ۳۰، الفلق:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ह़सद वाले के शर से जब वोह जले।*

ह़सद क्या है ?

किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के ज़वाल (या'नी उस से छिन जाने) की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फ़ुलां शख़्स को येह येह ने'मत न मिले, इस का नाम ह़सद है।[2]

ह़सद करने वाले को "ह़ासिद" और जिस से ह़सद किया जाए उसे "मह़सूद" कहते हैं। मषलन

---

1 ..... अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन, स. 85
(روح البیان، پ۶، المائدۃ: ۲۷تا۳۰، ۲/ ۳۷۹)

2 الحدیقۃ الندیۃ، الخلق الخامس عشر، ۱/۶۰۰

- किसी को माली त़ौर पर ख़ुशह़ाल देख कर जलना कुढ़ना और येह तमन्ना करना कि उस के हां चोरी या डकेती हो जाए या उस की दुकान व मकान में आग लग जाए और वोह कोड़ी कोड़ी का मोह़ताज हो जाए।
- किसी को आ'ला दीनी या दुन्यावी मन्सब व मर्तबे पर फ़ाइज़ देख कर दिल जलाना और येह तमन्ना करना कि इस से कोई ऐसी ग़लत़ी सर ज़द हो कि येह मक़ामो मर्तबा इस से छिन जाए और येह ज़लीलो रुस्वा हो जाए।
- येह ख़्वाहिश रखना कि फ़ुलां हमेशा तंगदस्त ही रहे कभी ख़ुशह़ाल न हो।
- फ़ुलां को कभी कोई इ़ज़्ज़त व मर्तबा न मिले वोह हमेशा ज़िल्लत की चक्की में ही पिसता रहे, इस मज़्मूम ख़्वाहिश का नाम **ह़सद** है।

ह़सद को ह़सद क्यूं कहते हैं ?

“**ह़सद**” का लफ़्ज़ “**ह़स्दलु**” से बना है जिस का मा'ना चेचड़ी (जूं के मुशाबे क़दरे लम्बा कीड़ा) है, जिस त़रह़ चेचड़ी इन्सान के जिस्म से लिपट कर उस का ख़ून पीती रहती है इसी त़रह़ ह़सद भी इन्सान के दिल से लिपट कर गोया उस का ख़ून चूस्ता रहता है इस लिये इसे ह़सद कहते हैं।(1)

(1) لسان العرب، باب الحاء، ۱/۸۲۶

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़सद एक वबा की त़रह़ मुआ़शरे में बड़ी तेज़ी से फैल रहा है, आज कल दूसरे का कारोबार ठप करने के लिये बड़ी जिद्दो जहद की जाती है, उस के माल की ख़्वाह मख़्वाह ख़राबियां बयान कर के उस दुकानदार पर त़रह़ त़रह़ के इल्ज़ामात डाले जाते हैं और यूं ह़सद के सबब झूट, ग़ीबत, चुग़ली, आबरू रेज़ी और न जाने क्या क्या मज़ीद और भी गुनाह किये जाते हैं ।

ह़सद से घरों की तबाही

हमारे मुआ़शरे के तक़रीबन हर दूसरे घर में सास बहू के दरमियान होने वाली लड़ाई की एक वजह **ह़सद** भी है । क्यूंकि शादी से क़ब्ल बेटे की मुकम्मल तवज्जोह अपनी मां की त़रफ़ होती है और आ़म त़ौर पर वोह जो कुछ कमाता है मां ही को देता है। बेटे की इस फ़रमां बरदारी से मां भी ख़ुश रहती है मगर शादी के बा'द जब बेटे की मह़ब्बत और तवज्जोह दो ह़िस्सों में तक़्सीम हो जाती है या'नी उस के वोह तमाम काम जो शादी से पहले उस की मां करती थी अब बीवी करने लगती है तो मां के दिल में येह वस्वसा पैदा होता है कि बेटे की मह़ब्बत शायद मुझ से कम हो गई है और यूं वोह ख़ुद को नज़र अन्दाज़ करना बरदाश्त नहीं कर पाती और उस पर एक झलाहट सुवार हो जाती है, फिर वोह बहू को जज़्बए

ह़सद में अपनी ह़रीफ़ और मद्दे मुक़ाबिल समझने लगती है। इधर बीवी येह समझती है कि इस का शोहर इस के बजाए अपनी मां को ज़ियादा वक़्त देता है, लिहाज़ा इस के दिल में भी **ह़सद** की आग भड़क उठती है, फिर जब कभी सास के मुंह से वोह कोई तल्ख़ बात सुनती है तो वोह भी तरक्की ब तरक्की जवाब देती है, यूं सास और बहू के दरमियान **ह़सद** की वजह से शुरूअ़ होने वाली इस जंग के शो'ले ख़ुश व ख़ुर्रम घराने को अपनी लपेट में ले कर ख़ाकस्तर कर देते हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़सद की येह आग हमारे मुआ़शरे के अम्नो सुकून को जला कर राख किये जा रही है ! मगर हम हैं कि ग़फ़्लत की चादर ओढ़े सो रहे हैं। याद रखिये ! हमारी येह ग़फ़्लत हमें ले डूबेगी और दुन्या के साथ साथ आख़िरत भी बरबाद कर देगी।

ह़सद के मुतअ़ल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा

(1) ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा जाती है।[1]

(2) ह़सद ईमान को इस त़रह़ ख़राब कर देता है जिस त़रह़ ऐलवा (या'नी एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शहद को ख़राब कर देता है।[2]

1 ابو داود، کتاب الادب، باب فی الحسد، ۴/ ۳۶۰، حدیث: ۴۹۰۳

2 کنز العمال، کتاب الاخلاق، الجزء الثالث، ۲/ ۱۸۶، حدیث: ۷۴۳۷

(3) ह़सद करने वाले, चुग़ली खाने वाले और काहिन के पास जाने वाले का मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं और न ही मेरा उस से कोई तअ़ल्लुक़ है।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह रिवायात हमारे सामने "**मरज़े ह़सद**" की क़बाह़त (बुराई) को वाज़ेह़ कर रही हैं, लिहाज़ा हम पर लाज़िम है कि अगर ख़ुद को इस मरज़ में मुब्तला पाते हैं तो इस के इ़लाज की जानिब माइल हों, कहीं इस मरज़ के सबब हमारा अन्जाम "इ़ब्रतनाक" न हो जाए।

ह़ासिद का इ़ब्रतनाक अन्जाम

एक नेक शख़्स किसी बादशाह के पास बैठ कर येह नसीह़त किया करता : अच्छे लोगों के साथ उन की अच्छाई की वजह से अच्छा सुलूक करो क्यूंकि बुरे लोगों के लिये उन की बुराई ही काफ़ी है। एक जाहिल को इस नेक शख़्स की (बादशाह से) इस क़ुर्बत पर **ह़सद** हुवा तो उस ने इस के क़त्ल की साज़िश तय्यार की और बादशाह से कहा : येह शख़्स आप को बदबूदार समझता है और इस की दलील येह है कि जब आप उस के क़रीब जाएंगे तो येह अपनी नाक पर हाथ रख लेगा ताकि आप की बदबू से बच सके। बादशाह ने उस से कहा : तुम जाओ मैं ख़ुद उसे देख लूंगा। येह साज़िशी वहां से निकला और उस नेक शख़्स को अपने घर दा'वत पर बुला

1 مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ماجاء فی الغیبة والنمیمة، ۸/۱۷۳، حدیث: ۱۳۱۲۶

कर लहसुन खिला दिया, वोह नेक आदमी वहां से निकल कर बादशाह के पास आया और ह़स्बे आ़दत बादशाह से कहा : **अच्छों के साथ अच्छा सुलूक करो क्यूंकि बुरे को अ़न क़रीब उस की बुराई ही काफ़ी होगी।** तो बादशाह ने उस से कहा : मेरे क़रीब आओ। वोह क़रीब आया तो उस ने इस ख़ौफ़ से अपनी नाक पर हाथ रख लिया कि कहीं बादशाह लहसुन की बू न सूंघ ले तो बादशाह ने अपने दिल में सोचा कि फ़ुलां आदमी सच कहता था। उस बादशाह की आ़दत थी कि वोह किसी के लिये अपने हाथ से सिर्फ़ इन्आ़म देने का ही फ़रमान लिखा करता था लेकिन अब की बार उस ने अपने एक गवर्नर को अपने हाथ से लिखा कि जब मेरा ख़त़ लाने वाला येह शख़्स तुम्हारे पास आए तो उसे ज़ब्ह़ कर देना और उस की ख़ाल में भूसा भर कर मेरे पास भेज देना। उस नेक शख़्स ने वोह ख़त़ लिया और दरबार से निकला तो वोही साज़िशी शख़्स उसे मिला, उस ने पूछा : येह ख़त़ कैसा है? नेक शख़्स ने जवाब दिया : बादशाह ने मुझे इन्आ़म लिख कर दिया है। साज़िशी शख़्स ने कहा : येह मुझे तोह़फ़तन दे दो। तो उस नेक शख़्स ने कहा : तुम ले लो। फिर जब वोह शख़्स ख़त़ ले कर आ़मिल के पास पहुंचा तो उस आ़मिल ने उस से कहा : तुम्हारे ख़त़ में लिखा है कि मैं तुम्हें ज़ब्ह़ कर दूं और तुम्हारी खाल में भूसा भर कर बादशाह को भेज दूं। उस ने कहा : येह ख़त़ मेरे लिये नहीं है मेरे मुआ़मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो ताकि मैं बादशाह से राबित़ा कर सकूं। तो आ़मिल ने कहा : बादशाह का ख़त़ आने के बा'द इस से रुजूअ़

नहीं किया जा सकता, लिहाज़ा आ़मिल ने उसे ज़ब्ह़ कर दिया और उस की खाल भूसे से भर कर बादशाह को भेज दी, फिर वोही नेक शख़्स ह़स्बे आ़दत बादशाह के पास आया और अपनी बात दोहराई : **अच्छों के साथ अच्छा सुलूक करो**। तो बादशाह ने ह़ैरतज़दा हो कर उस से पूछा : तुम ने ख़त़ का क्या किया ? उस ने जवाब दिया : मुझे फुलां शख़्स मिला था, उस ने मुझ से वोह ख़त़ मांगा तो मैं ने उसे दे दिया। तो बादशाह ने कहा : उस ने तो मुझे बताया था कि तुम कहते हो कि मेरे जिस्म से बू आती है। तो उस नेक शख़्स ने अ़र्ज़ की : मैं ने तो ऐसा नहीं कहा। फिर बादशाह ने पूछा : तुम ने अपनी नाक पर हाथ क्यूं रखा था ? उस ने बताया : उसी शख़्स ने मुझे लहसुन खिला दिया था और मैं ने पसन्द न किया कि आप उस की बू सूंघें। बादशाह ने कहा : तुम सच्चे हो अपनी जगह पर जा कर बैठ जाओ, यक़ीनन बुरे आदमी की बुराई उसे किफ़ायत कर गई।[1]

मा'लूम हुवा ★ जो किसी पर एह़सान करता है उस पर भी एह़सान किया जाता है और जो किसी के लिये बुरा चाहता है उस के साथ भी बुरा मुआ़मला होता है। ★ अच्छे काम का अच्छा नतीजा और बुरे काम का बुरा नतीजा। ★ जैसी करनी वैसी भरनी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **ह़सद** से महफ़ूज़ फ़रमाए।

1 الزواجر عن اقتراف الكبائر، الباب الاول فى الكبائر الباطنة ومايتبعها، الكبيرة الثالثة: الغضب بالباطل والحقد والحسد، ۱/۱۱۵

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़्लत की बदौलत
सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

यक़ीनन **ह़सद** की येह तबाहकारियां देख कर हर अ़क़्लमन्द शख़्स ख़ुद को इस से मह़फ़ूज़ रखने या मुब्तला होने की सूरत में इस से छुटकारा पाने की कोशिश करेगा, लिहाज़ा इस मरज़ को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिये इस का इ़लाज बयान किया जाता है।

ह़सद का इ़लाज

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं कि ह़सद क़ल्ब की बीमारियों में से एक बहुत बड़ी बीमारी है और इस का इ़लाज येह है :

- ह़सद करने वाला ठन्डे दिल से येह सोच ले कि मेरे ह़सद करने से हरगिज़ हरगिज़ किसी की दौलत व ने'मत बरबाद नहीं हो सकती और मैं जिस पर ह़सद कर रहा हूं मेरे ह़सद से उस का कुछ भी नहीं बिगड़ सकता। बल्कि मेरे ह़सद का नुक़्सान दीनो दुन्या में मुझ को ही पहुंच रहा है कि मैं ख़्वाह मख़्वाह दिल की जलन में मुब्तला हूं और हर वक़्त ह़सद की आग में जलता रहता हूं और मेरी नेकियां बरबाद हो रही हैं और मैं जिस पर ह़सद कर रहा हूं मेरी नेकियां क़ियामत में उस को मिल जाएंगी।
- फिर येह भी सोचे कि मैं जिस पर ह़सद कर रहा हूं। उस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह ने'मतें दी हैं और उस पर नाराज़ हो कर ह़सद में जल रहा हूं तो मैं गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़े'ल

पर ए'तिराज़ कर के अपना दीनो ईमान ख़राब कर रहा हूं। फिर अपने दिल में इस ख़याल को जमाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़लीम व ह़कीम है, वोह हर शख़्स को वोही चीज़ अ़ता फ़रमाता है जिस का वोह अहल होता है। मैं जिस शख़्स पर ह़सद कर रहा हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक चूंकि वोह इन ने'मतों का अहल था इस लिये उस ने उसे येह ने'मतें अ़ता फ़रमाईं और मैं चूंकि इन का अहल नहीं था इस लिये मुझे नहीं दीं। इस त़रह़ **ह़सद** का मरज़ दिल से निकल जाएगा और ह़ासिद को ह़सद की जलन से नजात मिल जाएगी।[1]

उस के अल्त़ाफ़ तो हैं आ़म शहीदी सब पर
तुझ से क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता

(2) चुग़ली की नुहूसत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **447** पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي ने एक ह़िकायत नक़्ल की है : एक ख़ुरासानी ह़ाजी साह़िब हर साल ह़ज की सआ़दत पाते और जब मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िर होते तो वहां एक अ़लवी बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाहिर बिन यह़या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में नज़राना पेश करते। एक बार मदीना शरीफ़ में किसी

1 احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، بیان الدواء الذی ینفی مرض الحسد عن القلب، ۳/ ۲۴۲

ह़ासिद ने कह दिया कि तुम बिला वजह अपना माल ज़ाएअ़ करते हो ! त़ाहिर साहिब ग़लत़ जगह पर तुम्हारा नज़राना ख़र्च करते हैं। चुनान्चे, मुसलसल दो साल उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ त़ाहिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ النَّاصِر की ख़िदमत न की। तीसरे साल सफ़रे ह़ज की तय्यारी के मौक़अ़ पर हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ महशर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुरासानी ह़ाजी के ख़्वाब में जल्वागर हो कर कुछ इस त़रह़ तम्बीह फ़रमाई : तुम पर अफ़्सोस ! बदख़्वाहों की बात सुन कर तुम ने त़ाहिर से हुस्ने सुलूक का रिश्ता ख़त्म कर दिया ! इस की तलाफ़ी करो और आइन्दा क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ से बचो। चुनान्चे, वोह एक फ़रीक़ की सुन कर बद गुमानी कर बैठने पर सख़्त शर्मिन्दा हुवे और जब मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا ह़ाज़िर हुवे तो सब से पहले उस अ़लवी बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ त़ाहिर बिन यह़्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िरी दी। उन्हों ने देखते ही फ़रमाया : अगर तुम्हें प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न भेजते तो तुम आने के लिये तय्यार ही न थे ! क्यूंकि तुम ने मुख़ालिफ़ की यक त़रफ़ा बात सुन कर मेरे बारे में ग़लत़ राए क़ाइम कर के अपनी आ़दते करीमाना तर्क कर दी यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तुम्हें तम्बीह फ़रमाई ! येह सुन कर ख़ुरासानी ह़ाजी साहिब पर रिक़्क़त त़ारी हो गई। अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप को येह सब कैसे मा'लूम हुवा ? फ़रमाया : मुझे पहले ही साल पता चल गया था, दूसरे साल भी तुम ने बे तवज्जोही से काम लिया तो मेरा दिल सदमे से चूर चूर

हो गया। इस पर जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में करम फ़रमा कर मुझे दिलासा दिया और तुम्हारे ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर जो कुछ इरशाद फ़रमाया था वोह भी मुझे बताया। ख़ुरासानी ह़ाजी ने ख़ूब नज़राना पेश किया, दस्त बोसी की और पेशानी चूमने के बा'द यक त़रफ़ा बात सुन कर राए क़ाइम कर के दिल आज़ारी का बाइ़ष बनने पर अ़लवी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मुआ़फ़ी मांगी।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

न क्यूं कर कहूं या ह़बीबी अग़िषनी(2)
इसी नाम से हर मुसीबत टली है
ख़ुदा ने किया तुझ को आगाह सब से
दो आ़लम में जो कुछ ख़फ़ी व जली(3) *है*(4)

चुग़ल ख़ोर की बातों में न आइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 حجۃ اللہ علی العالمین، ص ۵۷۱ مُلخَّصًا

2 ऐ मेरे प्यारे मेरी फ़रयाद को पहुंचिये।

3 ख़फ़ी व जली या'नी छुपा और ज़ाहिर।

4 ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 187

अपने गुलामों के ह़ालात से बा ख़बर रहते, ग़मज़दों के सिरहाने तशरीफ़ ले जा कर दिलासे देते, ख़ता करने वालों के ख़्वाब में जा कर इस्लाह़ फ़रमाते, **नेकी की दा'वत** पहुंचाते, गुनाहों पर तौबा का हुक्म फ़रमाते, फ़ासिले मिटाते और बिछड़ो को मिलाते हैं। ख़ुरासानी ह़ाजी साह़िब ने **चुग़लख़ोर** की बातों में आ कर **बद गुमानी** का शिकार हो कर यक त़रफ़ा ज़ेह्न बना लिया इस पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में **तम्बीह** फ़रमाई। इस से हमें भी दर्स मिला कि न ख़ुद चुग़ली खाएं न यक त़रफ़ा सुन कर दूसरे फ़रीक़ के बारे में कोई राए क़ाइम करें। ज़हे नसीब ! बिला इजाज़ते शरई मुसलमान के ख़िलाफ़ सुनने की आ़दत ही तर्क कर दें कि इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ीबतों, चुग़लियों, बद गुमानियों, ऐ़ब दरियों और दिल आज़ारियों जैसे मुतअ़द्दिद कबीरा गुनाहों और जहन्नम में ले जाने वाले कामों से नजात मिल जाएगी।

चुग़ली से घर की बरबादी

एक शख़्स ने किसी के हाथ अपना एक गुलाम फ़रोख़्त किया और ख़रीदार को कह दिया कि इस गुलाम में और कोई ऐ़ब नहीं, अलबत्ता ! चुग़ल ख़ोरी की आ़दत है। ख़रीदार ने इस ऐ़ब को ह़क़ीर जान कर उसे ख़रीद लिया, वोह गुलाम उस शख़्स की ख़िदमत में रहने लगा। एक रोज़ अपने आक़ा की बीवी के पास गया और कहा : ऐ बेगम साह़िबा ! मुझे अफ़्सोस है कि आप के

मियां को आप से कुछ महब्बत नहीं। अब इन का इरादा है कि कोई लौंडी ख़रीद कर उस के साथ ऐश मनाएं और आप को बिल्कुल छोड़ दें, अगर आप की ख़्वाहिश हो तो मैं आप को ऐसी तरकीब बताऊं जिस से उन का दिल आप की त़रफ़ माइल हो जाए और आप से महब्बत करने लगें। बीवी ने पूछा : वोह क्या तरकीब है? गुलाम ने कहा आज रात को जब आप के मियां सो जाएं तो उस्तरा ले कर गले के पास से उन की दाढ़ी के कुछ बाल मूंड लेना और उन बालों को अपने पास रखना फिर मैं तरकीब बता दूंगा। इस के बा'द गुलाम अपने आक़ा के पास आया और कहने लगा : हुज़ूर मैं ने आज बीबी को एक ग़ैर शख़्स के साथ इख़्तिलात़ करते हुवे देखा हैं और वोह आप को क़त्ल कर डालने की फ़िक्र में है। अगर आप मेरे क़ौल की तस्दीक़ चाहते हैं तो आज रात को आंखें बन्द कर के लैटे रहें और अपने को सोता हुवा बना लें। गुलाम की बात से उस के दिल में शक पैदा हो गया। रात को उस ने वैसा ही किया। औ़रत समझी कि सो रहा है उस्तरा ले कर दाढ़ी के बाल मूंडने के लिये बढ़ी शोहर का ख़याल पुख़्ता हो गया कि वाक़ेई वोह औ़रत उसे क़त्ल करना चाहती है फ़ौरन उठ खड़ा हुवा और उस्तरा छीन कर औ़रत को मार डाला। औ़रत के अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को मा'लूम हुवा तो दौड़े आए और उस शख़्स को क़त्ल कर दिया। फिर दोनों के अ़ज़ीज़ो अक़ारिब में बाहम लड़ाई हुई और सो के क़रीब आदमी मारे गए।[1]

1 تذکرۃ الواعظین، فی مذمۃ النمیمۃ، ص۳۵۹

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! किस त़रह़ चुग़ली की आ़दत फ़ितना व फ़साद का बाइ़ष बनी ! मगर अफ़्सोस आज कल चुग़ली इस क़दर आ़म है कि अकषर लोगों को शायद पता तक नहीं चलता कि मैं चुग़ल ख़ोरी कर रहा हूं।

चुग़ली किसे कहते हैं ?

उ़-लमा फ़रमाते हैं कि लोगों में फ़साद करवाने के लिये उन की बातें एक दूसरे तक पहुंचाना चुग़ली है।[1] शारेह़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى लिखते हैं कि जमहूर इसी ता'रीफ़ के क़ाइल हैं।[2]

क्या हम चुग़ली से बचते हैं ?

अफ़्सोस ! अकषर लोगों की गुफ़्तगू में आज कल ग़ीबत व चुग़ली का सिलसिला बहुत ज़ियादा पाया जाता है। दोस्तों की बैठक हो या मज़हबी इजतिमाअ़ के बा'द जमघट, शादी की तक़रीब हो या ता'ज़ियत की निशस्त, किसी से मुलाक़ात हो या फ़ोन पर बात, चन्द मिनट भी अगर किसी से गुफ़्तगू की सूरत बने और दीनी मा'लूमात रखने वाला कोई ह़स्सास फ़र्द अगर इस गुफ़्तगू की तफ़्तीश करे तो शायद अकषर मजालिस में दीगर गुनाहों भरे अल्फ़ाज़ के साथ साथ वोह दरजनों चुग़लियां भी षाबित कर दे।

1 شرح مسلم للنووی، ۲/ ۱۱۲

2 عمدۃ القاری، ۱۵/ ۲۰۹

हाए ! हाए ! हमारा क्या बनेगा ! एक ह़दीष में आया है कि चुग़ल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा ।[1]

चुग़ली के मुतअ़ल्लिक़ 6 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

(1) ग़ीबत, त़ा'ना ज़नी, चुग़ल ख़ोरी और बेगुनाह लोगों के ऐ़ब तलाश करने वालों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) कुत्तों की शक्ल में उठाएगा ।[2]

(2) चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा ।[3]

(3) बेशक चुग़ल ख़ोरी और कीना परवरी दोज़ख़ में है ।[4]

(4) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे वोह हैं जिन्हें देखें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बुरे बन्दे वोह हैं जो चुग़ल ख़ोरी करते, दोस्तों में जुदाई डालते और नेक लोगों के ऐ़ब तलाश करते हैं ।[5]

(5) ख़बरदार ! झूट चेहरे को सियाह कर देता है और चुग़ल ख़ोरी अ़ज़ाबे क़ब्र (का बाइ़ष) है ।[6]

1 مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم النمیمة، ص٦٦، حدیث: ١٠٥

2 الترغیب والترھیب، کتاب الادب، الترھیب من النمیمة، ٣/ ٣٩٥، حدیث: ٤٣٣٣

3 بخاری، کتاب الادب، باب ما یکرہ من النمیمة، ٤/ ١١٥، حدیث: ٦٠٥٦

4 الترغیب والترھیب، کتاب الادب، الترھیب من النمیمة، ٣/ ٣٩٣، حدیث: ٤٣٢٨

5 مسند احمد، ٦/ ٢٩١، حدیث ١٨٠٢٠

6 مسند ابی یعلی، ٦/ ٢٧٢، حدیث: ٧٤٠٤

(6) ग़ीबत और चुग़ली ईमान को इस त़रह़ काट देती हैं जिस त़रह़ चरवाहा दरख़्त को काट देता है।[1]

या रब्बे मुह़म्मद तू मुझे नेक बना दे अमराज़ गुनाहों के मेरे सारे मिटा दे
मैं ग़ीबतो चुग़ली से रहूं दूर हमेशा हर ख़स्लते बद से मेरा पीछा तू छुड़ा दे
मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा
चुप रहने का अल्लाह ! सलीक़ा तू सिखा दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चुग़ल ख़ोरी का इलाज

चुग़ल ख़ोरी से ख़ुद को बचाने का बेहतरीन त़रीक़ा कम गोई की आ़दत अपनाना है, काश ! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में ज़बान का कुफ़्ले मदीना[2] नसीब हो जाए, काश ! ज़रूरत के सिवा कोई लफ़्ज़ ज़बान से न निकले, क्यूंकि ज़ियादा बोलने वाले और दुन्यवी दोस्तों के झुरमट में रहने वाले का ग़ीबत और बिल ख़ुसूस चुग़ली से बचना बेह़द दुश्वार है। आह ! आह ! आह ! ह़दीषे पाक में है : जिस शख़्स की गुफ़्तगू ज़ियादा हो उस की ग़लतियां भी ज़ियादा होती हैं और जिस की ग़लतियां ज़ियादा हों उस के गुनाह भी ज़ियादा होते हैं और जिस के गुनाह ज़ियादा हों वोह जहन्नम के ज़ियादा लाइक़ है।[3]

1 الترغيب والترهيب، كتاب الادب، الترهيب من الغيبة... الخ، ۳/ ۴۰۵، حديث: ۴۳۲۶

2 ग़ैर ज़रूरी बातों से बचने को दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाना कहते हैं।

3 حلية الاولياء، ۳/۸۷، حديث: ۳۲۷۸

चुग़्ल ख़ोर कभी सच्चा नहीं हो सकता

चुग़्ल ख़ोरी से नजात का एक त़रीक़ा येह भी है कि चुग़्ली करने वाले की बात पर तवज्जोह दी जाए न उस की बात को कोई अहम्मिय्यत दी जाए। यूं जब चुग़्ल ख़ोरों को अपने मक़्सद (या'नी मुसलमानों को आपस में लड़ा कर मज़े लेने) में कामयाबी नहीं मिलेगी तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह चुग़्ल ख़ोरी से भी बाज़ आ जाएंगे। हां ! अगर हम उन की बात दिलचस्पी से सुनेंगे, हां में हां मिलाएंगे और उसे अहम्मिय्यत देते हुवे आपस में लड़ पड़ेंगे तो फिर चुग़्ल ख़ोरी का ख़ातिमा बहुत मुश्किल है क्यूंकि चुग़्ल ख़ोर यूंही फ़ितना अंगेज़ियां करते, मुसलमानों को आपस में लड़ाते रहेंगे और हम इन चुग़्ल ख़ोरों की बातों का यक़ीन कर के आपस में लड़ते रहेंगे, ह़ालांकि येह चुग़्ल ख़ोर इस क़ाबिल नहीं है कि इन की बात पर यक़ीन किया जाए क्यूंकि येह चुग़्ली करने के सबब फ़ासिक़ हो चुके और फ़ासिक़ की बात क़ाबिले ए'तिबार नहीं होती। चुनान्चे,

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन शिहाब जोह़री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی एक मरतबा बादशाह सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के पास तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स आया, बादशाह ने क़दरे नागवारी के साथ उस से कहा : मुझे पता चला है तुम ने मेरे ख़िलाफ़ फुलां फुलां बात की है। उस ने जवाब दिया : मैं ने तो ऐसा कुछ नहीं कहा। बादशाह ने इसरार करते हुवे कहा :

जिस ने मुझे बताया है, वोह (कैसे झूट बोल सकता है ! वोह तो बहुत) सच्चा आदमी है । तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने बादशाह को मुखा़त़ब कर के फ़रमाया : (आप को जिस ने इस त़रह़ की ख़बर दी वोह तो चुग़ली खाने वाला हुवा और) **चुग़ल ख़ोर** कभी सच्चा नहीं हो सकता । येह सुन कर बादशाह संभल गया और कहने लगा : हुज़ूर ! आप ने बिल्कुल बजा फ़रमाया । फिर उस शख़्स से कहा : إِذْهَبْ بِسَلَامٍ या'नी तुम सलामती के साथ लौट जाओ ।[1]

सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ का त़र्ज़े अ़मल

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز की ख़िदमते बा बरकत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और उस ने किसी के बारे में कोई मनफ़ी (Negative) बात की । आप ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे मुआ़मले की तह़क़ीक़ करें ! अगर तुम झूटे निकले तो इस आयते मुबारका के मिस्दाक़ क़रार पाओगे : اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا (پ۲۶، الحجرات:۶) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तह़क़ीक़ कर लो ।" और अगर तुम सच्चे हुवे तो येह आयत तुम पर सादिक़ आएगी : هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ۙ﴿۱۱﴾ (پ۲۹، القلم:۱۱) "**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बहुत त़ा'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला ।" और अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें

[1] إحياء العلوم، ۳/ ۱۹۳

मुआ़फ़ कर दें ! उस ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मोअमिनीन ! मुआ़फ़ कर दीजिये आइन्दा मैं ऐसा (या'नी ग़ीबतें और चुग़ल ख़ोरियां) नहीं करूंगा ।(1)

मह़ब्बतों के चोरों से बचो

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : अ़क्लों के दुश्मनों और मह़ब्बतों के चोरों से बचो, येह चोर चुग़ली खाने वाले हैं और चोर तो माल चुराते हैं जब कि येह (चुग़लियां करने वाले) लोग मह़ब्बतें चुराते हैं ।(2)

अन्धेरी क़ब्र का दिल से नहीं निकलता डर
करूंगा क्या जो तू नाराज़ हो गया या रब
सुनूं न फ़ोह़्श कलामी न ग़ीबत व चुग़ली
तेरी पसन्द की बातें फ़क़त़ सुना या रब(3)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि वोह हमें चुग़ली के मरज़ और चुग़ल ख़ोरों के फ़ितनों से मह़फ़ूज़ फ़रमाए ।

तेरे ह़बीब अगर मुस्कुराते आ जाएं
तो बिल यक़ीन उठे क़ब्र जगमगा या रब

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

मह़ब्बतों के चोर ..... चुग़ल ख़ोर, चुग़ल ख़ोर

1 إحياءُ العُلوم، ٣/ ١٩٣
2 المستطرف، الفصل الثالث فی تحريم السعاية بالنميمة، ١/ ١٥١
3 वसाइले बख़्शिश, स.93

(3) शराब की नुहूसत

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار इरशाद फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज के मोसिम में, मैं ख़ानए का'बा का त़वाफ़ कर रहा था। ह़ाजियों और उ़मरह करने वालों की इतनी कषरत थी कि इन्हें देख कर तअ़ज्जुब होता था। मेरे दिल में येह ख़्वाहिश उभरी कि काश ! किसी त़रह़ मुझे मा'लूम हो जाए कि इन लोगों में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कौन मक़्बूल है ताकि मैं उस को मुबारक बाद दूं और जिस के बारे में मा'लूम हो जाए कि वोह मर्दूद है और बारगाहे ख़ुदावन्दी में उस का ह़ज क़बूल नहीं तो उस को नेकी की दा'वत दूं और उस के लिये दुआ़ करूं। चुनान्चे, जब रात को सोया तो ख़्वाब में किसी कहने वाले ने कहा : ऐ मालिक बिन दीनार ! तू ह़ाजियों और उ़मरह करने वालों के बारे में फ़िक्र मन्द है ? तो सुन ! इस मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर छोटे बड़े, मर्द व औ़रत, सफ़ेद व सियाह रंगत वाले, अ़रबी व अ़जमी अल ग़रज़ हर ह़ज और उ़मरा करने वाले को तो बख़्श दिया है लेकिन एक शख़्स की मग़्फ़िरत नहीं की गई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इस शख़्स पर बहुत ज़ियादा ग़ज़ब है और वोह इस से नाराज़ है। इस का ह़ज क़बूल नहीं किया गया बल्कि इस के मुंह पर मार दिया गया है। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस ख़्वाब के बा'द मेरी जो ह़ालत हुई उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है। **मैं ने येह गुमान कर लिया कि वोह मग़ज़ूब शख़्स शायद मैं ही हूं और अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मुझ से नाराज़ है।** मैं बहुत परेशान रहा। सारा

दिन इसी ग़म और फ़िक्र में गुज़र गया फिर दूसरी रात थोड़ी देर के लिये मेरी आंख लगी तो फिर मुझे इसी त़रह़ का ख़्वाब नज़र आया और ऐसी ही ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी और कहा गया : ऐ मालिक बिन दीनार ! तू वोह नहीं जिस का ज़िक्र किया जा रहा है बल्कि वोह तो ख़ुरासान का एक शख़्स है जो बल्ख़ शहर में रहता है, उस का नाम मुह़म्मद बिन हरवन बल्ख़ी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से शदीद नाराज़ है, उस का ह़ज मर्दूद है और उस के मुंह पर मार दिया गया है। फ़रमाते हैं : सुब्ह़ मैं ख़ुरासान से आए हुवे ह़ाजियों के क़ाफ़िले में गया और उन से मुह़म्मद बिन हरवन बल्ख़ी के बारे में पूछा। उन्हों ने कहा : मरह़बा ! उस नेक शख़्स को कौन नहीं जानता, उस से बढ़ कर आ़बिदो ज़ाहिद पूरे ख़ुरासान में कोई नहीं। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझे उन लोगों की ज़बानी उस की ता'रीफ़ सुन कर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा क्यूंकि ख़्वाब में मुआ़मला इस के बर अ़क्स था। बहर ह़ाल मैं ने उन से पूछा : इस वक़्त वोह कहां होगा ? लोगों ने कहा : वोह चालीस साल से मुसलसल रोज़े रख रहा है और सारी सारी रात इबादत में गुज़ार देता है, अगर आप उसे तलाश करना चाहते हैं तो मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के किसी टूटे फूटे मकान में तलाश कीजिये वोह ऐसी ही जगहों में क़ियाम करता है। उन लोगों से येह मा'लूमात ह़ासिल करने के बा'द मैं मक्का शरीफ़ के वीरान अ़लाक़े की त़रफ़ गया और उसे ढूंडने लगा। बिल आख़िर एक दीवार के पीछे मैं ने एक शख़्स को

देख कर पहचान लिया कि येही इब्ने हरवन है। उस का सीधा हाथ कटा हुवा था जिसे उस ने सूराख़ कर के ज़न्जीर की मदद से गर्दन से लटकाया हुवा था। इसी त़रह़ उस ने अपने क़दमों में भी बेड़ियां डाल रखी थीं, वोह मश्ग़ूले इबादत था लेकिन जब उस ने मेरे क़दमों की आहट सुनी तो वोह मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! तू कौन है और कहां से आया है ? मैं ने बताया कि मेरा नाम मालिक बिन दीनार है और मैं बसरा का रहने वाला हूं। तो वोह बोला : ऐ मालिक बिन दीनार ! मेरे पास किस लिये आए हैं ? अगर मेरे मुतअ़ल्लिक़ कोई ख़्वाब देखा है तो बयान कीजिये। मैं ने कहा : मुझे तुम्हारे सामने वोह ख़्वाब बयान करते हुवे शर्म महसूस हो रही है। तो वोह कहने लगा : ऐ मालिक बिन दीनार ! जो ख़्वाब देखा है बयान कीजिये और शर्म महसूस न कीजिये। फ़रमाते हैं : बिल आख़िर मैं ने उसे ख़्वाब सुनाया तो वोह काफ़ी देर तक रोता रहा, फिर कहने लगा : ऐ मालिक बिन दीनार ! मुसलसल **40** साल से ह़ज के मौक़अ़ पर मेरे बारे में इसी त़रह़ का ख़्वाब किसी नेक व ज़ाहिद बन्दे को दिखाया जाता है और उसे बताया जाता है कि मैं **जहन्नमी** हूं।

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मैं ने उस से पूछा कि क्या तेरे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान कोई बहुत बड़ा गुनाह ह़ाइल है ? बोला : हां ! मेरा गुनाह ज़मीनो आस्मां और अ़र्शो कुरसी से भी बड़ा है। मैं ने कहा : मुझे अपना वोह गुनाह बताओ ताकि मैं लोगों को उस के इर्तिकाब से

बचाऊं और उन्हें उस गुनाह से डराऊं जिस की सज़ा तुम भुगत रहे हो। तो वोह कहने लगा : मैं **शराब** का आ़दी था और हर वक़्त शराब के नशे में मदहोश रहता। एक मरतबा मैं अपने एक शराबी दोस्त के पास गया। वहां ख़ूब शराब पी, जब नशा त़ारी होने लगा और मेरी अ़क़्ल पर पर्दा पड़ गया तो मैं नशे की ह़ालत में गिरता पड़ता घर पहुंचा और दरवाज़ा खट खटाया तो मेरी ज़ौजा ने दरवाज़ा खोला। घर में दाख़िल हुवा तो देखा कि मेरी वालिदा तन्नूर में लकड़िया डाल कर आग जला रही थी और आग ख़ूब भड़क रही थी। मेरी वालिदा ने जब मुझे नशे की ह़ालत में देखा तो मेरी त़रफ़ आई, मैं लड़ ख़ड़ा कर गिरने लगा तो उन्हों ने मुझे थाम लिया और बोलीं : आज शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म का आख़िरी दिन है और रमज़ानुल मुबारक की पहली रात शुरूअ़ होने वाली है, लोग सुब्ह़ रोज़ा रखेंगे और तेरी सुब्ह़ इस ह़ालत में होगी कि तू शराब के नशे में होगा ! क्या तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या नहीं आती ? येह सुनते ही मुझे ग़ुस्सा आ गया और मैं ने एक घूंसा अपनी वालिदा के सीने पर मारा और उसे उठा कर जलते हुवे तन्नूर में डाल दिया, मैं उस वक़्त नशे में था और मेरे होशो ह़वास बह़ाल न थे, जब मेरी ज़ौजा ने येह दर्दनाक मन्ज़र देखा तो उस ने मुझे धकेल कर एक कोठड़ी में बन्द कर दिया और बाहर से कुंडी लगा दी ताकि पड़ोसी मेरी आवाज़ न सुन सकें और उन्हें मुआ़मले की ख़बर न हो। सुब्ह़ जब होश आया तो देखा कि दरवाज़ा बन्द था। ज़ौजा को दरवाज़ा खोलने के लिये आवाज़ दी। तो उस ने बड़े

सख़्त लहजे में इन्कार कर दिया। मैं ने पूछा : तुम इतनी नाराज़ क्यूं हो ? **आख़िर मैं ने ऐसी कौन सी ख़ता की है ?** वोह बोली : तू ने इतनी बड़ी ख़ता की है कि तू इस लाइक़ ही नहीं कि तुझ पर रह़्म किया जाए। मैं ने फिर पूछा : आख़िर बात क्या है ? मुझे भी तो मा'लूम हो कि मैं ने क्या किया है ? फिर जब उस ने येह बताया कि मैं ने अपनी मां को जलते हुवे तन्नूर में डाल कर मार डाला है और अब वोह जल कर कोइला बन चुकी है। तो मुझ से न रहा गया और मैं ने दरवाज़ा उखाड़ फेंका और तन्नूर की त़रफ़ लपका, देखा तो मेरी वालिदा वाक़ेई जल कर कोइला हो चुकी थी। शिद्दते ग़म में उलटे क़दमों टूटे हुवे दरवाज़े की त़रफ़ बढ़ा, अपना हाथ जिस से मैं ने अपनी मां को घूंसा मारा था, चोखट पर रखा और काट डाला, फिर लोहा गर्म कर के उस हाथ की हड्डी में सूराख़ किया और उस में ज़न्जीर डाल कर गले में लटका लिया, इस के बा'द अपने दोनों पाउं में भी बेड़ी डाल ली और सब मालो मताअ़ राहे ख़ुदा में लुटा दिया। अब मुसलसल **40** साल से मेरी येह ह़ालत है कि दिन में रोज़ा रखता हूं और सारी सारी रात अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इबादत करता हूं और **40** दिन के बा'द खाना खाता हूं। सिर्फ़ इफ़्त़ारी के वक़्त थोड़ा सा पानी और कोई मा'मूली सी चीज़ खा लेता हूं। हर साल ह़ज करने आता हूं और हर साल किसी आ़लिमो ज़ाहिद को मेरे मुतअ़ल्लिक़ ऐसा ही ख़्वाब दिखाया जाता है जैसा आप को दिखाया गया है, येह है मेरी सारी **दास्ताने इ़ब्रत निशान**।

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : येह सुन कर मैं ने उस से कहा : ऐ मन्हूस इन्सान ! क़रीब है कि जो आग तुझ पर नाज़िल होने वाली है वोह सारी ज़मीन को जला डाले। फिर मैं वहां से एक त़रफ़ हो गया और एक जगह छुप गया ताकि वोह मुझे न देख सके। जब उस ने महसूस किया कि मैं जा चुका हूं तो वोह हाथ उठा कर कुछ यूं मुनाजात करने लगा : "ऐ ग़मों और मुसीबतों को दूर करने वाले ! ऐ मजबूर और परेशान ह़ाल लोगों की दुआएं क़बूल करने वाले ! ऐ मेरी उम्मीदों की लाज रखने वाले ! ऐ गहरे समन्दरों को पैदा करने वाले ! ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ऐ वोह ज़ात जिस के दस्ते कुदरत में तमाम भलाइयां हैं ! मैं तेरी रिज़ा चाहता हूं और तेरी नाराज़ी से पनाह मांगता हूं, तू अपने अ़फ़्वो करम के सदक़े मुझे अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रख और मुझे अपनी नाराज़ी से बचा। ऐ मेरे पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मैं कमा ह़क़्क़ूहू तेरी ता'रीफ़ नहीं कर सकता, तू ऐसा ही है जैसा कि तू ने अपनी ता'रीफ़ ख़ुद बयान फ़रमाई, ऐ मेरे रह़ीमो करीम परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू मेरी उम्मीदों की लाज रख ले, बेशक मैं तुझ से तेरी रह़मत का त़ालिब हूं। (मुझे यक़ीन है) कि तू मेरी दुआ को रद्द नहीं करेगा। मैं सिर्फ़ तुझ ही से दुआ करता हूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मौत से पहले मुझे अपनी रिज़ा का मुज़्दा सुना दे और मुझे अपने अ़फ़्वो करम की एक झलक दिखा दे।" उस की येह रिक़्क़त अंगेज़ मुनाजात सुन कर मैं लौट आया। फिर रात को

नींद आई तो दिल की आंखें खुल गईं और ख़्वाब में मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मालिक बिन दीनार ! तू लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस के अ़फ़्वो करम से मायूस मत कर, यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुह़म्मद बिन हरवन के अफ़्आ़ल से बा ख़बर है और उस ने उस की दुआ़ क़बूल फ़रमा कर उस की लग़्ज़िशों और ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमा दिया है, सुब्ह़ उस के पास जाना और उस से कहना : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत मैदाने महशर में तमाम अव्वलीनो आख़िरीन को जम्अ़ फ़रमाएगा । अगर किसी सींग वाले जानवर ने बिग़ैर सींग वाले जानवर को मारा होगा तो उस को बदला दिलवाएगा और ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब लेगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब लूंगा और अगर किसी ने ज़र्रा भर भी ज़ुल्म किया होगा तो मज़लूम को ज़ालिम से उस का ह़क़ दिलवाऊंगा । ऐ इब्ने हरवन ! कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे और तेरी मां को इकट्ठा करेगा, तेरे मुतअ़ल्लिक़ जहन्नम का फ़ैसला होगा । फ़िरिश्ते तुझे मज़बूत ज़न्जीरों में जकड़ कर जहन्नम की त़रफ़ धकेल देंगे, फिर तू दुन्यवी तीन दिन रात के बराबर जहन्नम की आग का मज़ा चखेगा क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मेरे ज़िम्मए करम पर है कि मेरा जो बन्दा भी नाह़क़ किसी जान को क़त्ल करेगा या शराब पियेगा तो मैं उसे जहन्नम की आग का मज़ा ज़रूर चखाऊंगा अगर्चे वोह बरगुज़ीदा ही क्यूं न हो । ऐ इब्ने हरवन ! फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी मां के दिल में तेरे लिये

रह़्म डालेगा और उस के दिल में येह बात डाल देगा कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से येह सुवाल करे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे बेटे को बख़्श दे। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे, तेरी वालिदा के ह़वाले कर देगा और वोह तेरा हाथ पकड़ कर तुझे जन्नत में ले जाएगी। फ़रमाते हैं : सुब्ह़ हुई तो मैं फ़ौरन इब्ने हरवन के पास गया और अपना पूरा ख़्वाब कह सुनाया। ब ख़ुदा ! ख़्वाब सुन कर वोह झूम उठा और उस की रूह़ इस त़रह़ उस के तन से जुदा हो गई जैसा कि पथ्थर को जब पानी में डाला जाए तो वोह आसानी से डूब जाता है। फिर उस की तजहीज़ व तकफ़ीन का इन्तिज़ाम किया गया और मैं ने उस के जनाज़े में शिर्कत की।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! किस त़रह़ शराब के नशे में मदहोश इस शख़्स ने अपनी मां को दहकते तन्नूर में फेंका और हलाकत इस का मुक़द्दर ठहरी।

याद रखिये ! शराब पीने के बा'द आदमी मदहोशी के आ़लम में बसा अवक़ात कोई ऐसा काम कर बैठता है जिस पर वोह सारी ज़िन्दगी कफ़े अफ़्सोस मलता रहता है। क्यूंकि शराब नोशी एक ऐसी बुराई है जिस की कोख से मज़ीद बुराइयां जनम लेती हैं।[2]

1 عیون الحکایات، الحکایۃ السابعۃ بعد المائۃ، ص۱۳۵

2 शराब के अह़काम और इस की नुहूसतों और नुक़्सानात के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **112** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बुराइयों की मां**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

शराब बुराइयों की अस्ल है

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़ष्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक दिन खुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि मैं ने हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : "बुराइयों की अस्ल (या'नी शराब) से बचो क्यूंकि तुम से पहले एक शख़्स था जो लोगों से अलग थलग रह कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत किया करता, एक औ़रत उस की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार हो गई, जिस ने बहाने से आ़बिद को अपने घर बुलवाया और जब वोह पहुंचा तो जिस दरवाज़े से अन्दर दाख़िल होता वोह बन्द कर दिया जाता यहां तक कि वोह उस औ़रत के पास जा पहुंचा। कमरे में औ़रत के क़रीब एक लड़का खड़ा था और शीशे का एक बड़ा बरतन भी था जिस में शराब थी। औ़रत बोली : "मै ने तुम्हें इस लिये बुलाया है कि तुम इस लड़के को क़त्ल कर दो या मेरी नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करो या शराब का एक जाम पी लो, अगर इन्कार किया तो मैं शोर मचा कर तुम्हें ज़लीलो रुस्वा कर दूंगी।" आख़िर वोह शख़्स छुटकारे की कोई राह न पा कर शराब पीने पर राज़ी हो गया, औ़रत ने शराब का एक जाम पिलाया तो उस ने (नशे में झूमते हुवे) मज़ीद शराब मांगी, वोह शराब पीता रहा यहां तक कि न सिर्फ़ उस औ़रत के साथ मुंह काला किया बल्कि लड़के को भी क़त्ल कर दिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़ीद फ़रमाया : "पस तुम शराब से बचते रहो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! बेशक ईमान और शराब नोशी

दोनों किसी शख़्स के सीने में कभी जम्अ़ नहीं हो सकते, (अगर कोई ऐसा करेगा तो) ईमान व शराब में से एक, दूसरे को निकाल बाहर करेगा।''(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! उस आ़बिद ने बदकारी और क़त्ल से तो इन्कार कर दिया और सिर्फ़ शराब पीने पर जान छूटती नज़र आई तो नादान आ़बिद समझा कि शराब पीने से दोनों ख़त़रनाक कामों या'नी बदकारी और क़त्ल से जान छूट जाएगी। चुनान्चे, उस ने शराब पी ली मगर इस की नुहूसत से बदकारी और क़त्ल जैसे गुनाहों से न बच सका। ह़क़ीक़त में उस आ़बिद ने गुनाहों की चाबी को इख़्तियार कर लिया था और शराब पीने के एक गुनाह को इख़्तियार करने से कई गुनाहों के दरवाज़े खुल गए। शराब की इन्ही ख़राबियों की वजह से इस्लाम ने इसे हमेशा के लिये ह़राम क़रार दिया है मगर हमारे मुआ़शरे में जहां दूसरी बे शुमार बुराइयां पनप रही हैं इन में से शराब नोशी एक वबा की शक्ल इख़्तियार करती जा रही है जिस ने मुआ़शरे का चेहरा तक मस्ख़ कर दिया है और बद क़िस्मती से आज एक त़बक़ा कषरत से शराब पीने लगा है, शादी बियाह और दीगर मुख़्तलिफ़ तक़रीबात में शराब पेश की जाने लगी है, आह ! इन्सान कितना नादान है कि अपने ही हाथों अपनी बरबादी का सामान कर रहा है। एक त़रफ़ कुफ़्र की तारीकियों से बेज़ार और ह़िफ़ाज़ते ईमान के लिये घर बार वार देने वाले सह़ाबए वाला तबार हैं जिन्हों ने शराब की हुरमत का

1 الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الاشربة، فصل فی الاشربة، ۷/ ۳۶۷، حدیث: ۵۳۲۴

हुक्म सुना तो उस की त़रफ़ देखना तो दरकनार कभी उस के मुतअ़ल्लिक़ सोचा तक नहीं और एक त़रफ़ इ़श्क़े मुस्त़फ़ा से सरशार इन हस्तियों के बर अ़क्स वोह ना बकार व ना हन्जार लोग हैं जो मुफ़्त में मिली हुई दौलते ईमान पा कर और शराब के जाम पी कर ह़िफ़ाज़ते ईमान से ग़फ़्लत का शिकार हैं ! ऐसे लोगों को सोचना चाहिये कि क्या वोह ख़ुद शैत़ान को येह आसानी फ़राहम नहीं कर रहे कि वोह उन के ईमान की दौलत चुरा ले जाए ? हाए अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस अगर इसी ह़ालत में मौत का क़ासिद उन के पास येह पैग़ाम ले कर आ गया कि बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िरी और आ'माल की जवाब देही का वक़्त आ चुका है और तौबा की मोहलत भी न मिली तो ऐसे लोगों का अन्जाम क्या होगा ! ऐसे कोताह फ़हमों को उस वक़्त के आने से पहले ख़बरदार करते हुवे दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइ़ज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''शराब का आ़दी (बिग़ैर तौबा किये) मर गया तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बुत परस्त की त़रह़ पेश होगा।''(1)

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार
तू अचानक मौत का होगा शिकार
मौत आ कर ही रहेगी याद रख !
जान जा कर ही रहेगी याद रख !

1 مسند احمد، مسند عبد الله بن العباس، ۱/ ۵۸۳، حدیث: ۲۴۵۳

शराब के दस नुक़्सान

अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल मुसलमानों की एक ता'दाद مَعَاذَاللّٰه शराब नोशी की नुहूसत में गिरिफ़्तार है, ऐसे लोगों को चाहिये कि इमाम अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ली मुहद्दिष इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 597 हि.) ने बहरुद्दुमूअ़ में शराब के जो दस नुक़्सानात नक़्ल फ़रमाए हैं, इन्हें ज़रूर पेशे नज़र रखिये। चुनान्चे, आप फ़रमाते हैं कि शराब नोशी में 10 बुरी ख़स्लतें हैं :

(1) येह बन्दे की अ़क़्ल में फुतूर डाल देती है इस त़रह़ वोह बच्चों के लिये तमाशा और मज़ाक़ बन जाता है। इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक शराबी को पेशाब करते हुवे देखा, वोह अपने मुंह पर पेशाब मल रहा था और कह रहा था : या इलाही ! मुझे कषरत से तौबा करने वालों और पाकीज़ा रहने वालों में शामिल फ़रमा। मज़ीद फ़रमाते हैं : मैं ने नशे में मदहोश एक शख़्स को देखा जिस ने क़ै की थी और कुत्ता उस का मुंह चाट रहा था तो वोह नशा करने वाला उस से कह रहा था : ऐ मेरे आक़ा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे औलिया जितनी बुज़ुर्गी अ़त़ा फ़रमाए !

(2) येह माल को ज़ाएअ़ और बरबाद करती है और तंग दस्ती का सबब बनती है जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दुआ मांगी :

या इलाही ! हमें शराब के बारे में वाज़ेह हुक्म इरशाद फ़रमा दे क्यूंकि येह माल को बरबाद और अ़क़्ल को ख़त्म कर देती है ।

(3) येह अ़दावत और दुश्मनी का सबब है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اِنَّمَا یُرِیْدُ الشَّیْطٰنُ اَنْ یُّوْقِعَ بَیْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِی الْخَمْرِ وَالْمَیْسِرِ وَیَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿۹۱﴾ (پ۷، المائدۃ: ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : शैत़ान येही चाहता है कि तुम में बैर और दुश्मनी डलवा दे शराब और जूए में और तुम्हें **अल्लाह** की याद और नमाज़ से रोके तो क्या तुम बाज़ आए । जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रब عَزَّوَجَلَّ हम बाज़ आ गए ।

(4) शराब खाने की लज़्ज़त और दुरुस्त कलाम से शराबी को महरूम कर देती है ।

(5) बा'ज़ अवक़ात शराब, शराबी पर उस की बीवी को ह़राम कर देती है और इस के बा वुजूद औ़रत का मर्द के साथ (बीवी के त़ौर पर) रहना **बदकारी** है । इस की सूरत येह है कि शराबी अकषर नशे में त़लाक़ दे देता है और बा'ज़ अवक़ात दी हुई त़लाक़ को ऐसे भूल जाता है कि उसे एह़सास तक नहीं होता और यूं अपनी ह़राम की हुई बीवी से बदकारी का मुर्तकिब हो जाता है। बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان से मन्क़ूल है : जिस ने अपनी बेटी को किसी

शराबी के निकाह़ में दिया गोया उस ने अपनी बेटी को बदकारी के लिये पेश कर दिया।

(6) येह हर बुराई की कुंजी है और शराबी को बहुत से गुनाहों में मुब्तला कर देती है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मरवी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ख़ुत़बे में इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! शराब नोशी से बचते रहो क्यूंकि येह तमाम बुराइयों की जड़ है।

(7) येह शराबी को बदकारों की मजलिस में ले जाती है अपनी बद बू से इस के कातिब फ़िरिश्तों को ईज़ा देती है।

(8) येह शराबी पर आस्मानों के दरवाज़े बन्द कर देती है 40 दिन तक न उस का कोई अ़मल ऊपर पहुंचता है न ही दुआ़।

(9) शराब नोशी, शराबी पर अस्सी कोड़े वाजिब कर देती है, लिहाज़ा अगर वोह दुन्या में इस सज़ा से बच भी गया तो आख़िरत में मख़्लूक़ के सामने उसे कोड़े मारे जाएंगे।

(10) येह शराबी की जान और ईमान को ख़त़रे में डाल देती है। इस लिये मरते वक़्त ईमान छिन जाने का ख़दशा रहता है।[1]

1 بحر الدموع، ص ۲۱۴

मदनी माहोल और शराबियों की तौबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर बे शुमार शराबी शराब की नुहूसत से न सिर्फ़ जान छुड़ा चुके हैं बल्कि अब उन का शुमार मुआ़शरे के बा इ़ज़्ज़त अफ़राद में होने लगा है। चुनान्चे, आइये ! जानते हैं कि कैसे दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ के सुन्नतों भरे बयान और इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में एक जूआरी और शराबी ताइब हुवा और मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन कर दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गया।

मैं शराबी और चोर था

बम्बई (हिन्द) के इस्लामी भाई का बयान कुछ इस त़रह़ है कि मुझे ग़लत़ सोह़बत के सबब कम उ़म्री ही में शराब और जूए की लत पड़ गई थी, हीरे और सोने की स्मगलिंग में महारत के बाइ़ष मैं इस मैदान में किंग मश्हूर था। हमारे घर के क़रीब दा'वते इस्लामी वाले हर जुमुआ़ को जम्अ़ हो कर दर्सो बयान का सिलसिला किया करते थे, मेरी मां मुझ से शिर्कत का कहा करती मगर मैं टाल दिया करता। आख़िरे कार मां की इनफ़िरादी कोशिश की बरकत से एक बार शरीक हो ही गया, मुझे मुबल्लिग़ का अन्दाज़े बयान तो पसन्द आया मगर पल्ले कुछ न पड़ा, इख़्तिताम पर मुझ पर मुबल्लिग़ ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे, बम्बई के अ़लाक़े गुवन्डी (گوونڈی)

में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश की, मैं ने ह़ामी भर ली। इजतिमाअ़ वाली शब दोस्तों के साथ शराब ख़ाने पहुंचा मगर आज दिल कुछ उचाट सा था, सब ने शराब मंगवाई मगर मैं ने कोल्ड्रिंक का ऑर्डर दिया। इस पर दोस्तों ने मेरी त़रफ़ मुतअ़ज्जिबाना अन्दाज़ में देखा तो मैं ने कहा : मुझे किसी ने इजतिमाअ़ की दा'वत दी है मुझे वहां वा'ज़ सुनने जाना है। येह सुनते ही दोस्तों में हंसी का फ़व्वारा उबल पड़ा और कहने लगे : यार ! क्या येह मुह़र्रम का महीना है ? वा'ज़ तो मुह़र्रम में होते हैं, तुम्हारे साथ किसी ने मज़ाक़ किया होगा। मैं भी सोच में पड़ गया कि वाक़ेई वा'ज़ तो मुह़र्रम शरीफ़ में ही होते हैं मगर फिर मैं ने दिल बांधा और येह कहते हुवे उठा कि अगर वा'ज़ नहीं होगा तो वापस आ जाऊंगा। बाहर निकल कर रिक्शा पकड़ कर सीधा इजतिमाअ़ गाह में जा पहुंचा। वहां मांगी जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ ने मुझे ख़ूब रुलाया, रो रो कर मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की। इजतिमाअ़ ख़त्म होने के बा'द मुबल्लिग़ ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे मुझे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत पेश की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना, वहीं मैं ने दाढ़ी शरीफ़ और इमामए मुबारका की निय्यत की। जूआरी और शराबी दोस्तों से पीछा छुड़ाया और दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल अपनाया। चूंकि मुझे **वात** नामी एक तश्वीशनाक बीमारी थी जिस के सबब ऐसा लगा करता था

जैसे आंख में कंकरी सी पड़ी है। डॉक्टर भी इस के इलाज से आ़जिज़ थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहौ़ल की बरकत से मुझे उस मूज़ी मरज़ से भी छुटकारा नसीब हो गया।

छोड़ें मै नौशियां, मत बकें गालियां
आइयें तौबा करें, क़ाफ़िले में चलो
ऐ शराबी तू आ, आ जूआरी तू आ
छूटें बद आ़दतें, क़ाफ़िलों में चलो (1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) बे ह़याई की नुहूसत

प्यारे इस्लामी भाइयो! इन्सान पर माहौ़ल के जो इन्तिहाई गहरे अषरात मुरत्तब होते हैं इस से इन्कार मुमकिन नहीं, अच्छा माहौ़ल अच्छी सोच पैदा करता है तो बुरा माहौ़ल ज़ेहनों को परा गन्दा करता है। चुनान्चे, जिस मुआ़शरे में शराबियों और जूआरियों का राज हो वहां बसने वालों का इन गुनाहों के अषराते बद से बचना बहुत मुश्किल है, कुछ ऐसी ही सूरते ह़ाल हमारे मुआ़शरे की हो चुकी है, मग़रिब से फ़ेशन के नाम पर उठने वाली फ़ह्हाशी व उ़रयानी की मस्मूम (ज़हरीली) हवाएं शर्मो ह़या के चराग़ों को तेज़ी से बुझा रही हैं, येही वजह है कि आज जिधर देखें फ़ह्हाशी

1 वसाइले बख़्शिश, स.615

व उ़रयानी और बे ह़याई पर मब्नी नज़्ज़ारे नज़र आते हैं, येह बे ह़याई का मरज़ एक वबा की त़रह़ हमारे मुआ़शरे में सरायत करता जा रहा है, दुन्यावी अमराज़ के इ़लाज की तो हमें फ़िक्र रहती है मगर येह बे ह़याई का मरज़ हमारी तहज़ीब व इक़्दार को दीमक की त़रह़ चाट रहा है लेकिन किसी को कोई परवाह नहीं । चुनान्चे, ज़रूरत इस बात की है कि हम सह़ीह़ इस्लामी तसव्वुरे ह़या को आ़म कर के इस बेह़याई के इफ़रिय्यत (भूत) का क़ल्अ़ क़म्अ़ करें, क्यूंकि इस्लाम में ह़या की बड़ी अहम्मिय्यत है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़या ईमान (की ख़स्लतों में) से है और ईमान जन्नत में है और बे ह़याई ज़ुल्म (की ख़स्लतों में) से है और ज़ुल्म जहन्नम में है ।[1] और एक ह़दीषे पाक में है : बेशक हर दीन का एक ख़ुल्क़ है और इस्लाम का ख़ुल्क़ ह़या है ।[2] या'नी हर उम्मत की कोई न कोई ख़ास ख़स्लत होती है जो दिगर ख़स्लतों पर ग़ालिब होती है और इस्लाम की वोह ख़स्लत ह़या है, क्यूंकि ह़या एक ऐसा ख़ुल्क़ है जो अख़्लाक़ी अच्छाइयों की तक्मील, ईमान की मज़बूत़ी का बाइ़ष और इस की अ़लामात में से है ।

1 کنز العمال، کتاب الاخلاق، ۲/ ۵۲، حدیث: ۵۷۶۱

2 ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الحیاء، ۴/ ۴۶۰، حدیث: ۴۱۸۱

ह़या क्या है ?

ह़या एक ऐसी सिफ़त है जो इन्सान को बुरे कामों से रोकती है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी ह़दीषे पाक में है : اِذَا لَمْ تَسْتَحْیِ فَافْعَلْ مَا شِئْتَ या'नी जब तुझ में ह़या न रहे तो जो चाहे कर।(1)

और साह़िबे मिरक़ात ह़या के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : وَھُوَ خُلُقٌ یَّمْنَعُ الشَّخْصَ مِنَ الْفِعْلِ الْقَبِیْحِ بِسَبَبِ الْاِیْمَانِ : या'नी ह़या वोह आ़दत है जो ईमान के सबब आदमी को बुरे कामों से रोक दे।(2)

बे ह़याई की तबाही

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! हम मुसलमान ह़या को छोड़ कर गुनाहों की अन्धेरी वादियों में खो गए हैं, येह ह़या ही तो थी जो इस पुर ख़ार और फ़ानी व मुर्दार दुन्या की अन्धेरियों में एक चराग़ की त़रह़ हमारी रहनुमाई कर रही थी, हमारे क़दमों को गुनाहों की त़रफ़ बढ़ने से रोक रही थी, जब येह ही न रही तो हर बुरी सिफ़त हम में पैदा हो गई। आज नौजवान नस्ल क्या क्या गुल नहीं खिला रही ! येह नस्ल चादर और चार दीवारी का पाकीज़ा ह़िसार

1 بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ۵۶، ۲/ ۴۷۰، حدیث: ۳۴۸۳

2 مرقاۃ المفاتیح، ۱/ ۱۴۰، تحت الحدیث ۵

(हल्क़ा, दाइरा) तोड़ कर मख़्लूत ता'लीम (Co-Education) और बॉय व गर्ल फ्रेन्ड (Boy/Girl Friend) के जाल में गिरिफ़्तार हो चुकी है।

इस्लाम ने जिस औ़रत के लिये शर्मो ह़या को उस का ज़ेवर बनाया था वोह सरे बाज़ार अपनी नुमाइश पर तुली हुई है, शादी बियाह की तक़रीबात में बे बाकाना नाचती और थरकती नज़र आती है ..! कहीं इस नौजवान नस्ल को बे ह़याई की गहरी खाई में गिराने के ज़िम्मेदार हम ही तो नहीं ? जी हां ! जिस लड़के या लड़की के हाथ में पाकीज़ा किरदार के ह़ामिल सलफ़े सालिह़ीन की शर्मो ह़या पर मब्नी ह़िकायात की किताबें होनी चाहिये थीं हम ने उन के हाथ में इश्क़िया व फ़िस्क़िया नाविल और रूमानी शाइ़री की किताबें थमा दीं, जिस अवलाद की तर्बिय्यत की ज़िम्मेदारी हमारी थी हम ने उसे रीमोट कन्ट्रोल (Remote control) पकड़ा कर टीवी के सामने बिठा दिया गोया इस की लगाम ग़ैर मुस्लिमों के हाथ में थमा दी कि लो हमारी आलो अवलाद तुम्हारे ह़वाले ! इन के ज़ेह्नों में जितना चाहो फ़ह्हाशी व उ़रयानी का ज़ह्र घोल दो, आह ! हमें क्या हो गया है ? समझ में नहीं आता कि इस बिगड़े हुवे मुआ़शरे का रुख़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त की त़रफ़ कैसे फेरा जाए और इस को जहन्नम की त़रफ़ दौड़े चले जाने से रोक कर किस त़रह़ जन्नत की सम्त ले जाया जाए ! आह ! आह ! आह ! ऐसा दौर आ चुका है गोया हर कोई مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ जहन्नम में गिरना चाहता है, शर्मो

ह़या का अ़न्सर बिल्कुल ख़त्म हो चुका है, निजी मुआ़मलात हों या इजतिमाई तक़रीबात, मह़ल्ला हो या बाज़ार हर जगह शर्मो ह़या का क़त्ले आ़म और बे ह़याई की धूम धाम है, जिस को देखो बढ़ चढ़ कर बे ह़याई का शैदाई नज़र आ रहा है।

बे ह़याई से नजात का त़रीक़ा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम सब अपनी और अपने अहले ख़ाना की इस्लाह़ की कोशिश करें, शर्मो ह़या के फ़ज़ाइल और बे ह़याई के नुक़्सानात पर ग़ौर करें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत जल्द हमारा मुआ़शरा बे ह़याई की गन्दगी से पाको साफ़ हो जाएगा। बिल ख़ुसूस हम में से जो घर के सरबराह हैं उन पर येह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी आ़इद होती है कि वोह अपने अहले ख़ाना को बे ह़याई की गन्दगी से नजात दिलाएं क्यूंकि घर के सरबराह के अख़्लाक़ व किरदार का अषर उन के मा तह़्त अफ़राद पर पड़ता है, अगर वोह बा ह़या होंगे तो लाज़िमन इस के अषरात ख़ानदान के दीगर अफ़राद पर पड़ेंगे।

बा ह़या बाप के किरदार का अषर

एक शख़्स कषीरुल इ़याल और घर का वाह़िद कफ़ील था, बीमार होने के बाइ़ष घर में फ़ाक़े होने लगे, उस की एक जवान लड़की थी जिस ने छोटे बहन भाइयों को भूक से बिलकते देखा तो बर्दाश्त न कर सकी और अपने आप को संवारा, मैक-अप किया और न चाहते हुवे भी इस इरादे से निकली कि बाहर मेरे ह़ुस्न से

मुतअष्षिर हो कर हो सकता है कोई मुझे गुनाह की दा'वत पेश करे और मैं अपना जिस्म फ़रोख़्त कर के उस से रक़म हासिल कर के अपने बहन भाइयों का पेट पाल सकूं। चुनान्चे, वोह लड़की तय्यार हो कर बाज़ार में निकली, पूरा दिन बाज़ार में घूमती रही मगर उस की त़रफ़ किसी ने देखा तक नहीं, थकी हारी घर आई, बाप ने पूछा : बेटी ! पूरा दिन कहां थी ? बेटी ने सर झुका कर नदामत और शर्म के साथ बाप को पूरा ह़ाल बयान कर दिया कि अब्बा जान ! छोटे बहन भाइयों की भूक प्यास मुझ से बर्दाश्त नहीं होती, इन की भूक प्यास ने मुझे बे क़रार कर के गुनाह की त़रफ़ माइल कर दिया लेकिन अ़जीब वाक़िआ़ हुवा कि मैं पूरा दिन बाज़ार में घूमती रही मगर किसी शख़्स ने मेरी त़रफ़ आंख उठा कर भी नहीं देखा। बाप के लबों पर हल्की सी मुस्कुराहट आ गई और उस बुज़ुर्ग बाप ने इरशाद फ़रमाया : **बेटी ! तुझे कोई नज़र उठा कर कैसे देखेगा कि तेरे बाप ने पूरी जवानी में किसी ग़ैर औ़रत की त़रफ़ नज़र उठा कर नहीं देखा !!!**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने किस त़रह़ एक बा ह़या बाप के पाकीज़ा किरदार के अषरात ने उस की बेटी को बदकारी से बचा लिया। हमें भी अपने क़ल्बो निगाह की ह़िफ़ाज़त करनी चाहिये कि इस की बरकत से न सिर्फ़ हमारे अहले ख़ाना की नज़रे बद से ह़िफ़ाज़त होगी बल्कि हमारे मुआ़शरे से भी बे ह़याई और बद किरदारी की आफ़त दूर होगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

बे हयाई के ख़िलाफ़ दा'वते इस्लामी की जंग

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने बे ह़याई व बे पर्दगी के ख़िलाफ़ भी ए'लाने जंग कर रखा है। आप भी दा'वते इस्लामी वाले बन जाइये ताकि तमाम आ़शिक़ाने रसूल मिल कर बे ह़याई के मुंह ज़ोर शैत़ानी सैलाब के सामने सीसा पिलाई दीवार बन जाएं और एक सह़ीह़ इस्लामी मुआ़शरा मा'रिज़े वुजूद में आए। चुनान्चे, बे ह़याई के ख़िलाफ़ दा'वते इस्लामी की जारी जंग का ह़िस्सा बनने और अपनी इस्लाह़ के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा मदनी इन्आ़मात पर ख़ुद भी अ़मल कीजिये और अपने घर वालों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये। नीज़ सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये हर माह आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी करते रहिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा। हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी की बरकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आप ने गुनाहों की नुहूसतों को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि किस त़रह़ गुनाहों की कषरत हलाकत के गहरे ग़ार में फेंक देती है। ख़ुदा नख़्वास्ता अगर आप गुनाहों के

गिरदाब (भंवर) में फंसे हुवे हैं तो आइये और दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मदनी माहोल आप को गुनाहों की दलदल से निकाल कर नेकियों की पाक सर ज़मीन पर ला खड़ा करेगा, गुनाहों से नफ़रत, नेकियों से महब्बत और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन मिलेगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा व महके महके मदनी माहोल के मुआशरे पर पड़ने वाले अषरात एक खुली किताब की तरह हैं, हर आंख येह देख सकती है कि किस तरह बाबुल मदीना (कराची) के एक अलाके से निकलने वाली येह तहरीक दुन्या पर छाती जा रही है और तादमे तहरीर इस का मदनी पैग़ाम कमोबेश **187** मुमालिक तक जा पहुंचा है, इस तहरीक ने कई घरों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, नौजवानों के सर इमामों के ताज और जिस्म सुन्नतों भरे लिबास से सजा दिये हैं, इस्लामी बहनों को मदनी बुर्क़ेअ पहना दिये हैं, इस दौरे पुर फ़ितन में जब कि हर एक दिमाग़ पर फ़िरंगी फ़ेशन का ख़ुमार (नशा) छाया हुवा है, दा'वते इस्लामी ने आक़ाए दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत के वोह जाम पिलाए कि जदीद तहज़ीब के नशे का सब ख़ुमार उतार कर रख दिया और हर एक गोया ज़बाने हाल से पुकार उठा :

मैं मुस्तफ़ा के जामे महब्बत का मस्त हूं
येह वोह नशा नहीं जिसे तुर्शी उतार दे

जो कल तक गानों बाजों के शौक़ीन थे अब ना'तें सुना रहे हैं, जो कल तक फ़िल्मों डिरामों के फ़ोहूश मनाज़िर देखने के दिलदादह थे आज मदीने की पुर बहार फ़ज़ाएं देखने के त़लबगार हैं, जो कल तक मुआ़शरे के लिये नासूर थे आज लोगों के दिलों का सुरूर हैं, कल तक जो लड़की बे पर्दगी के जन्जाल (मुसीबतो आफ़त) में गिरिफ़्तार थी आज मदनी बुर्क़अ़ के पाकीज़ा ह़िसार (दाइरे) में है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा, मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के इस पैग़ाम को न सिर्फ़ आ़म किया बल्कि उ़श्शाक़ को घोल कर पिला दिया :

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आ़दत कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह ह़क़ीक़त है कि मोह़सिन व करीम और शफ़ीक़ व रह़ीम आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें हमेशा याद फ़रमाते रहे, बल्कि दुन्या में तशरीफ़ लाते ही आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सजदा किया। उस वक़्त होंटों पर येह दुआ़ जारी थी :

رَبِّ هَبْ لِيْ اُمَّتِيْ या'नी परवर दगार ! मेरी उम्मत मुझे हिबा कर दे।[1]

1 फ़तावा रज़विय्या, 30/717

मुहद्दिषे आ'ज़म पाकिस्तान हज़रते अल्लामा मौलाना सरदार अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد फ़रमाया करते थे कि हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो सारी उम्र हमें उम्मती उम्मती कह कर याद फ़रमाते रहे, क़ब्रे अन्वर में भी उम्मती उम्मती फ़रमा रहे हैं और हश्र तक फ़रमाते रहेंगे यहां तक कि महशर के रोज़ भी उम्मती उम्मती फ़रमाएंगे। हक़ येह है कि अगर सिर्फ़ एक बार भी उम्मती फ़रमा देते और हम सारी ज़िन्दगी **या नबी ! या नबी ! या रसूलल्लाह ! या हबीबल्लाह !** कहते रहें तब भी उस एक बार **उम्मती** कहने का **हक़** अदा नहीं हो सकता !(1)

जिन के लब पर रहा "उम्मती उम्मती"
याद उन की न भूल ए नियाज़ी कभी
वोह कहें उम्मती तू भी कह या नबी !
मैं हूं हाज़िर तेरी चाकरी के लिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारा इतना ख़याल फ़रमाएं कि दुन्या में तशरीफ़ लाए तो हमें याद फ़रमाया, क़ब्र में तशरीफ़ ले गए तो हमें याद फ़रमाया, अब क़ब्रे अन्वर में हश्र तक याद फ़रमाने के इलावा रोज़े महशर भी करम फ़रमाएंगे तो उस मोहसिन आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 आशिक़े अक्बर, स.53

का भी हम पर हक़ है कि हम उन की याद को अपनी आ़दत बना लें, सिर्फ़ ज़बान से नहीं बल्कि अ़मली तौ़र पर भी।

चुनान्चे, दा'वते इस्लामी ने हमें येह जे़हन दिया कि अपने आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदाओं को अपना के उन्हें याद करें, इसी लिये तो शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हमें सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे का ताज दिया कि जब हम सर पर इ़मामा शरीफ़ सजाएं तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद आए, चेहरे पर दाढ़ी सजाएं तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद आए, सुन्नतों भरा लिबास पहनें तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद आए और जब मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करें तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद आए कि हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस त़रह़ नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये सऊ़बतें उठाईं। ग़रज़ इस माह़ोल के दिये हुवे त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ सुन्नतों से मा'मूर अपने शबो रोज़ गुज़रेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा हर हर लम्ह़ा अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की यादों में बसर होगा, गोया कि हम दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के इस शे'र के मिस्दाक़ बन जाएंगे :

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आ़दत कीजिये

गुनाहों और जहालत के अन्धेरों में डूबे हुवे मुआ़शरे में दा'वते इस्लामी का महका महका मदनी माहोल उम्मीद की किरन है, इस की बरकत से हर त़रफ़ उजाला फेलता जा रहा है, क्यूंकि दा'वते इस्लामी ने मुआ़शरे की नब्ज़ पर हाथ रख कर जहां मुख़्तलिफ़ मुआ़शरती अमराज़ की तश्ख़ीस की वहीं जामेअ़ मन्सूबा बन्दी और ठोस ह़िक्मते अ़मली के ज़रीए़ इन अमराज़ से छुटकारा पाने के लिये मुख़्तलिफ़ इक़्दामात भी किये। चुनान्चे, येही वजह है कि दा'वते इस्लामी **80** से ज़ाइद शो'बाजात में इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों को सह़ीह़ इस्लामी त़र्ज़े ज़िन्दगी के सांचे में ढालने के लिये रात दिन एक किये हुवे है। ऐ काश ! तमाम मुसलमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह़कामात पर अ़मल करने वाले और दा'वते इस्लामी के इस मदनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ की अ़मली तस्वीर बन जाएं। लिहाज़ा ख़ुद को कुरआनो सुन्नत के सांचे में ढालने और दुन्या भर के मुसलमानों तक नेकी की दा'वत पहुंचाने के लिये इस अ़ज़ीमुश्शान तह़रीक का ह़िस्सा बन जाइये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रह कर मदनी कामों की धूमें मचाने और परहेज़गार व बा किरदार मुसलमान बनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

ماخذ ومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مولف
1	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
2	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
3	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت
4	خزائن العرفان	صدر الافاضل نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
5	نور العرفان	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ، پیر بھائی کمپنی، مرکز الاولیاء لاہور
6	مصنف عبد الرزاق	امام عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۱ھ
7	مسند امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
8	صحیح بخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت
9	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ، دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ

10	سنن ابن ماجه	امام ابو عبد الله محمد بن یزید ابن ماجه، متوفی ۲۷۳ھ، دار المعرفه، بیروت ۱۴۲۰ھ
11	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
12	سنن دار قطنی	امام علی بن عمر دار قطنی، متوفی ۳۸۵ھ، مدینة الاولیاء ملتان
13	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی، متوفی ۷۳۹ھ، دار الکتب العلمیة، بیروت ۱۴۱۷ھ
14	مسند ابی یعلی	احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ، دار الکتب العلمیة، بیروت ۱۴۱۸ھ
15	المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
16	حلیة الاولیاء	ابو نعیم احمد بن عبد الله اصفهانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ، دار الکتب العلمیة، بیروت ۱۴۱۹ھ
17	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیهقی، متوفی ۴۵۸ھ، دار الکتب العلمیة، بیروت
18	فردوس الاخبار	حافظ شیرویه بن شهر دار بن شیرویه دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
19	تاریخ مدینه دمشق	علامه علی بن حسن ابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ

20	الترغیب والترھیب	امام عبد العظیم بن عبد القوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
21	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ھیثمی، متوفی ۸۰۷ھ، دار الفکر، بیروت
22	کنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین برھان پوری، متوفی ۹۷۵ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
23	شرح صحیح مسلم	امام محی الدین ابو زکریا یحیی بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۰۱ھ
24	عمدۃ القاری	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
25	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
26	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ، رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاھور
27	قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ، دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۶ھ
28	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ، دار صادر، بیروت
29	بحر الدموع	امام عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ، مکتبۃ دار الفجر دمشق ۱۴۲۰ھ

30	عیون الحکایات	امام عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ، دار الکتب العلمیة ۱۴۲۴ھ
31	مختصر منهاج القاصدین	امام احمد بن محمد بن عبد الرحمن بن قدامہ مقدسی متوفی ۶۴۲ھ، دار الخیر ۱۴۱۸ھ
32	الحدیقة الندیة	علامہ عبد الغنی بن اسماعیل نابلسی حنفی، متوفی ۱۱۴۳ھ، پشاور
33	سبع سنابل	مولانا میر عبد الواحد بلگرامی متوفی ۱۰۱۷ھ، مکتبہ قادریہ مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۰۲ھ
34	المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح، متوفّٰی ۸۵۰ھ، دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
35	شرح الصدور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ، مرکز اهلسنت برکاتِ رضا، هند
36	تنبیه المغترین	عبد الوهاب بن احمد بن علی بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ، دار المعرفه، بیروت ۱۴۲۵ھ
37	الزواجر	ابو العباس احمد بن محمد بن حجر مکی هیتمی، متوفی ۹۷۴ھ، دار المعرفة، بیروت ۱۴۱۹ھ
38	المنبهات	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی شافعی، متوفی ۸۵۲ھ، پشاور
39	جہنم میں لے جانے والے اعمال	ابو العباس احمد بن محمد بن حجر مکی هیتمی، متوفی ۹۷۴ھ، مکتبة المدینه، باب المدینه کراچی

40	حجۃ اللہ علی العالمین	علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ، مرکز اہلسنت برکاتِ رضا، ھند
41	تذکرۃ الواعظین	مولانا محمد جعفر قریشی حنفی، کوئٹہ
42	حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
43	اسلامی زندگی	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
44	عجائب القرآن	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
45	جنتی زیور	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
46	نیکی کی دعوت	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
47	باحیا نوجوان	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
48	عاشق اکبر	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
49	وسائل بخشش	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
50	لسان العرب	جمال الدین محمد بن مکرم ابن منظور الافریقی، متوفی ۷۱۱ھ، مؤسسۃ الاعلمی للمطبوعات بیروت ۱۴۲۶ھ

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान हज़रते मौलाना मुहम्मद इमरान अत्तारी سلّمه الباری के तहरीरी बयानात

तब्अ शुदा व ज़ेरे तब्अ बयानात

(1) फ़ैज़ाने मुर्शिद (कुल सफ़हात : 46)	(14) जन्नत की तय्यारी (कुल सफ़हात : 134)
(2) एहसासे ज़िम्मेदारी (कुल सफ़हात : 50)	(15) वक़्फ़े मदीना (कुल सफ़हात : 86)
(3) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात : 68)	(16) मदनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े (कुल सफ़हात : 73)
(4) मदनी मश्वरे की अहम्मिय्यत (कुल सफ़हात : 32)	(17) सूद और उस का इलाज (कुल सफ़हात : 92)
(5) सीरते सय्यिदुना अबुद्दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ (कुल सफ़हात : 75)	(18) प्यारे मुर्शिद (कुल सफ़हात : 48)
(6) बुराइयों की मां (कुल सफ़हात : 112)	(19) फ़ैसला करने के मदनी फूल (कुल सफ़हात : 56)
(7) ग़ैरत मन्द शोहर (कुल सफ़हात : 48)	(20) जामेए शराइत पीर (कुल सफ़हात : 88)
(8) सहाबी की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 124)	(21) कामिल मुरीद (कुल सफ़हात : 48)
(9) पीर पर ए'तिराज़ मन्अ है (कुल सफ़हात : 60)	(22) अमीरे अहले सुन्नत की दीनी ख़िदमात (कुल सफ़हात : 480)
(10) जन्नत का रास्ता (कुल सफ़हात : 56)	(23) हमें क्या हो गया है ? (कुल सफ़हात :116)
(11) मक़्सदे हयात (कुल सफ़हात : 60)	(24) मौत का तसव्वुर (कुल सफ़हात :44)
(12) सदक़े का इन्आम (कुल सफ़हात : 60)	(25) बेटी की परवरिश (कुल सफ़हात :72)
(13) एक आंख वाला आदमी (कुल सफ़हात : 48)	(26) गुनाहों की नुहूसत (कुल सफ़हात : 112)

ज़ेरे तरतीब तहरीरी बयानात

(1) एक ज़माना ऐसा आएगा	(2) मरज़ से क़ब्र तक

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

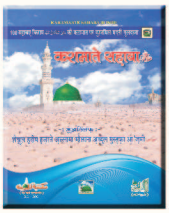

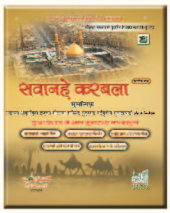

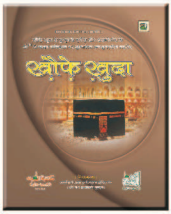

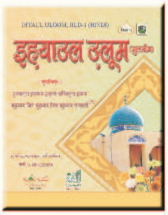

-: मक्तबतुल मदीना की शाख़ें :-

- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- 19 - 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
- नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099
- अजमेर :- 19 / 216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, फ़ोन : (0145) 2629385
- हुबली :- A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860
- हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : www.dawateislami.net

مکتبۃ المدینہ (دعوت اسلامی)

MC 1286